॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीसत्यनारायण व्रतकथा

संस्कृत-हिन्दी

[पूजन-विधि, हवन, श्रीविष्णुसहस्रनामावलि एवं आरती सहित]

संकलनकर्ता

आचार्य धीरेन्द्र

(ज्योतिष/वास्तु/यज्ञ–विशेषज्ञ)

कान्हादर्शन धार्मिक प्रकाशन

Web:www.acharyadhirendra.com/email_kanhadarshan@gmail.com

प्राक्कथनम्

सत्यस्यव्रतमाचरत्

जीवन में सत्य का आचरण करना ही सत्यव्रत है

सत्य का बोध कराने वाला देव है श्रीसत्यनाराण। सत्य की राह बताने वाली कथा है–श्रीसत्यनारायण व्रतकथा। वास्तव में सत्य का क्या स्वरूप है, वही इस कथा के माध्यम से भगवान् श्रीहरि ने अपने भक्तों को समझाया है। संकल्प–पूर्वक दृढ़ निश्चय के साथ क्रिया विशेष द्वारा जो अनुष्ठान किया जाये, उसे व्रत कहा जाता है, हमारे शास्त्रों में जिन–जिन व्रतों का वर्णन किया गया है वे कभी न कभी किसी ऋषि–महर्षि, अथवा महापुरुष साधक के द्वारा किये गये अनुष्ठान ही हैं। उनसे सम्बन्धित कथाओं में बताया गया है कि सर्वप्रथम इस व्रत को किसने किया तथा उसे किस अभीष्ट फल की प्राप्ति हुई। इसलिये वर्तमान समय में भी वह व्रत करणीय है। व्रतोपवास का न केवल दृष्ट फल ही है। अपितु इससे कर्ता का शुभ अदृष्ट फल भी बनता है, दृढ़ निश्चय का संस्कृत में संकल्प नाम दिया गया है। किसी भी व्रत का अनुष्ठान करने अथवा नियम लेने के लिये दृढ़ इच्छा–शक्ति की आवश्यकता होती है। हमारे यहाँ इसीलिये किसी भी शुभ कार्य को प्रारंभ करते समय संकल्प का विधान बनाया गया है। मनु महाराज का कथन है–

संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः॥

जो भी कामना की जाती है, उसके मूल में एक संकल्प रहता है यज्ञ भी संकल्प से संभव होते हैं, व्रत नियम और धर्म सभी संकल्प जनित होते हैं। संकल्प ही कार्य में प्रधान होता है। इसलिये दीर्घकाल तक उपासना करने योग्य कार्यकलाप को जो एक निश्चित संकल्प के साथ किया जाये उसे व्रत कहा गया है।

कुछ साधक अपने इष्ट देव की तिथि को उपवास, भजन, एवं पूजन का विशेष व्रत रखते हैं। विष्णुभक्त प्रतिमास की दोनों एकादशी, शिवभक्त महाशिवरात्रि और गणेशभक्त चतुर्थी को व्रत रखते हैं। किसी कामना विशेष की पूर्ति

के लिये जो अनुष्ठान किया जाये उसे भी व्रत कहा जाता है। क्योंकि कर्ता उस अनुष्ठान की अवधि में कुछ विशेष नियमों का पालन करता है। इसी प्रकार ब्रह्मचारी के लिये उपनयन संस्कार के समय से लेकर समावर्तन-संस्कार के समय तक कुछ यम-नियमों का पालन करना होता है, इसलिये उसका नाम व्रतबन्ध प्रचलित हुआ।

उपवास—समीपता बोधक अव्यय है। इसलिये उपवास का शाब्दिक अर्थ होता है। समीप में वास। अभिप्राय यह है कि उपवास के द्वारा साधक अपने इष्ट की निकटता का अनुभव करे। भौतिक धरातल, आगे आध्यात्मिक स्तर का अनुभव करे। मन और इन्द्रियों से आगे आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रसर हो विधिपूर्वक उवपास करने से शरीर के अनेक विकार दूर होते हैं। वात, पित्त और कफ की विषमता से उत्पन्न होने वाले सभी रोग बिना औषधी सेवन से ठीक हो जाते हैं। आलस्य और थकान दूर होकर स्फूर्ति का अनुभव होता है। असन्तुलित आहार के कारण शरीर जो एक बोझ का अनुभव करता है, वह उपवास से दूर होता है। उपवास से शरीर में एक हल्कापन अनुभव होता है। इतना होने पर भी उपवास साध्य नहीं साधना मात्र ही माना जाना चाहिये। चित्तप्रसाद की स्थिति से जो चिन्तन किया जाएगा वह परिणाम में सुखावह ही होता है। ध्यान की एकाग्रता प्राप्त होती है।

विचार शक्ति सद्भावना से पूर्ण होती है। मन की एकाग्रता से ईश्वर के चिन्तन, मन में अधिक समय तक लीन रहने की इच्छा जाग्रत होती है। व्रतोपवास धर्म के अङ्गरूप ही है, व्रतोपवास में दस लक्षणात्मक धर्मस्वरूप का अनुपालन अति आवश्यक है अन्यथा केवल व्रतालाभ ही होगा। महाराज मनु ने धर्म के दस लक्षण इस प्रकार बताये हैं।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थात् धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध ये धर्म के दस लक्षण है—

आचार्य धीरेन्द्र

॥ 卐 ॥

॥ श्रीगणे ाय नमः ॥

पूजन क्रम प्रारम्भ

मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः। मङ्गलं पुण्डरीकाक्ष मङ्गलाय तनो हरिः॥

सर्वप्रथम पूजनकर्ता स्नान आदि नित्यक्रिया से निवृत्त होकर, नवीन या घर में धोये हुए शुद्ध वस्त्र एवं उपवस्त्र धारण कर, सपत्नीक शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठ जाएँ एवं पवित्र हो, पवित्रीकरण, आचमन आदि करें। यजमान पत्नी को यजमान के दक्षिण भाग में बैठने का विधान है। यथा

सर्वेषु शुभकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभाः। अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः॥
वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितृणां पाद शौचने। रथारोहणकाले च ऋतुकाले सदा भवेत्॥

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरी काक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐपुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐपुण्डरीकाक्षः पुनातु,

आचार्य ऊपर लिखे मन्त्र से यजमान के ऊपर जल का प्रोक्षण करे।

त्रिराचमनम्

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः, इति करौ प्रक्षाल्य।

तीन बार आचमन करें एवं हाथ धो ले॥

आसनशुद्धिः

हाथ में जल लेकर निम्न लिखित विनियोग पढें और जल एक पात्र में या पृथिवी पर छोड़ दे।

विनियोगः ॐ पृथिवीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।

ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

आसन में जल छिड़कें।

पवित्रीधारणम्

निम्नलिखित मन्त्र से दाहिने हाथकी अनामिका के मूलभाग में पवित्रीधारण करे।

ॐपवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः।

तस्यतेपवित्रपतेपवित्र पूतस्ययत्त्कामः पुनेतच्छकेयम्।

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा मम पवित्रकम्॥

शिखाबन्धनम् हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढें और जल एक पात्र में या पृथिवी पर छोड़ दे।

विनियोगः ॐ मानस्तोकिति मन्त्रस्य कुत्सऋषिः जगती छन्दः एकोरुद्रोदेवता शिखाबन्धने विनियोगः।

निम्नलिखित मन्त्र से शिखा बाँधे।

ॐचित् रूपिणी महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखा बन्धे तेजो वृद्धिं कुरुश्च मे॥

ब्रह्मवाक्य सहस्रेण शिववाक्य शतेन च। विष्णोर्नाम सहस्रेण शिखाग्रन्थिं करोम्यहम्॥

प्राणायामः पूरक, कुम्भक एवं रेचक निम्नलिखित मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें:

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥ (हस्तौ प्रक्षाल्य)॥

आधारशक्ति प थिवीपूजनम्

यजमान के सामने सिन्दूर से त्रिकोण रेखा खींच कर गन्ध, अक्षत व पुष्प लेकर माता पृथिवी की पूजा करे।

ॐस्योनापृथिवि नोभवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्मसप्रथाः।

ॐभूर्भुवः स्वः आधारशक्त्यै नमः विष्णुपत्न्यै नमः वसुन्धरायै नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

(भूमि को स्पर्श कर प्रणाम करें)

प्रर्थनाम् **ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥**

ॐभूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि प्रणमामि।

निम्नलिखित मन्त्रों से अपने संप्रदायानुसार चन्दन लगायें।

पुरुष तिलककरण मन्त्र

ॐभद्रमस्तु शिवञ्चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा॥

महापुरुष तिलक करण मन्त्र

ॐस्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्श्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु।

अक्षतारोपणम् (अक्षत लगाएँ)

ॐयुञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तंपरितस्थुषः। रोचन्तेरोचनादिवि। (ऋग्वे.)

बालक तिलक मन्त्र

ॐयावद् गङ्गा कुरुक्षेत्रे यावत्तिष्ठति मेदिनी। यावद् रामकथा लोके तावज्जीवतु बालकः॥

कन्या तिलक मन्त्र

ॐअम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

सौभाग्यवती स्त्री तिलक मन्त्र

ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण॥

(आयुष्मती सौभाग्वतीपुत्रवती जीववत्सा भव)

विधवा तिलक मन्त्र

ॐतद्विष्णोः परमंपदꣳ सदापश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥ त्रीणिपदा व्विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्॥ (आयुष्मती धर्मवती विष्णुव्रतवती भव)

रक्षासूत्र बन्धन

निम्नलिखित मन्त्र से यजमान के दक्षिण हाथ में रक्षासूत्र बाँधे और कन्याओं के दक्षिण हाथ में ही मौली बाँधें एवं विवाहित स्त्रियों के बायें हाथ में रक्षासूत्र बाधें।

ॐ येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः। ते न त्वां मनु बध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

यजमान रक्षासूत्र बन्धन

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽ आबध्नामि शतशारदाया युष्माञ्जर दष्ट्यिर्यथासम्॥

यजमानपत्नी रक्षासूत्र बन्धन

ॐ तम्पत्नीभिरनु गच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः। नाकङ् गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः॥

ग्रन्थिबन्धनम् (गठजोड़ा)

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण॥

इस मन्त्र से ग्रन्थिबन्धन (गठजोड़ा) करें।

कर्मपात्रपूजनम्

यजमान के बायीं ओर त्रिकोण मण्डल बनाकर गन्धाक्षत से पूजन कर कर्मपात्र स्थापित करें एवं हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से वरुण का आवाहन करें।

ॐ भगवन् वरुणागच्छ त्वमस्मिन् कलशे प्रभो। कुर्वेऽत्रैव प्रतिष्ठां ते जलानां शुद्धि हेतवे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं स शक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

अङ्कुश मुद्रा दिखाकर तीर्थों का आवाहन करें एवं मत्स्य मुद्रा से ढँक लें, व निम्नलिखित मन्त्र को आठ बार पढ़ें।

ॐ वं वरुणाय नमः।

कर्मपात्र का थोड़ा सा जल लेकर पूजन सामग्री, भूमि एवं यजमान के ऊपर निम्नलिखित मन्त्र से संप्रोक्षण करें।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु व्विश्श्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

भूतापसारणम् (रक्षाविधान)

बाएँ हाथ में पीली सरसो या अक्षत लेकर दाहिने हाथ से कर्म भूमि के चारों तरफ व दसों दिशाओं में निम्नमन्त्र पढ़ते हुए बिखेरकर भूतापसारण करें।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
भूत प्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानदस्माद् ब्रजन्त्यन्यत् स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्॥
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति के चन। ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु देवपूजां करोम्यहम्॥

तीन बार ताली बजाकर सभी विघ्नों का अपसारण करें।

: स्वस्तिवाचनम् :

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर सुन्दर धारणाओं की कल्पना करें एवं मंगल मन्त्रों को श्रवण करें।

हस्ते अक्षत् पुष्पाणि ग हीत्वा स्वस्तिवाचनं पठेत्

हरिः ॐ आनोभद्द्राः क्क्रतवोयन्तु व्विश्श्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानोयथासद मिद्वृधेऽ असन्न प्प्रायुवो रक्षितारोदिवे दिवे ॥१॥

देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाअं रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवानाअंसख्यमुपसे दिमाव्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥

तान्पूर्व्वया निविदा हूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्य्यमणं व्वरुणः सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा

मयस्करत् ॥३॥

तन्नोव्वातो मयो भुव्वातुभेषजन्तन्माता पृथिवीतत्पिताद्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ॥४॥

तमीशानञ्जग तस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥

ॐस्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाःस्वस्तिनःपूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥६॥

पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभँय्यावानो व्विदथेषुजग्मयः। अग्नि जिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽ अवसागमन्निह ॥७॥

भद्द्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्द्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्यशे महिदेवहि तँय्यदायुः ॥८॥

शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्। पुत्रासोयत्र पितरो भवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥

अदितिर्द्यौ रदितिरन्तरिक्ष मदितिर्म्माता स पितासपुत्रः। व्विश्वेदेवाऽ अदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जा तमदिति र्जनित्त्वम् ॥१०॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳯ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्विश्श्वे देवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वᳯ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥११॥

यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥

॥ ॐशान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ॥ शान्तिर्भवतु सुशान्तिर्भवतु ॥

॥ शान्तिर्भवतु सुशान्तिर्भवतु ॥

निम्नलिखित मन्त्रों से हाथ में अक्षत पुष्प लेकर महागणपति आदि का स्मरण करें

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शची पुरन्दराभ्यां नमः। ॐ माता पितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमगुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः। ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत् कर्मप्रधान देवताभ्यो नमः।

गणेशजी का ध्यान करें (द्वादशदेवानां नमस्कृत्य)

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलोगज कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलाय तनो हरिः॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयोर्भूति ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहांगङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्येषु सिद्धये॥

-: संकल्प :-

यजमान अपने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सुपाड़ी, पैसा एवं कुश रखकर पवित्र भावना से पूजन करने के निमित्त प्रतिज्ञा संकल्प करें

हस्ते जलाऽक्षत द्रव्यं पुष्पं कुश   ादाय सङ्कल्पं कुर्यात्

ॐ विष्णुः, विष्णुः, विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्राह्मणोह्नि द्वितीयेपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैक देशे....स्थाने, विक्रमशके बौद्धावतारे ....नामसंवत्सरे....अयने.... ऋतौ....मासे....पक्षे....तिथौ....वारे....नक्षत्रे....योगे....करणे....राशि स्थितेचन्द्रे....राशिस्थिते भास्करे....रास्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ......गोत्रोत्पन्नोऽहं......नामोऽहं (वर्मोऽहं/ गुप्तोऽहं) शर्मोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराण इतिहासोक्त फलावाप्तये, ऐश्वर्य अभिवृद्धयर्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, प्राप्त लक्ष्म्याः चिरकाल संरक्षणार्थं, सकल मन ईप्सित कामना संसिद्धि

अर्थं, लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यश विजय लाभादि प्राप्ति अर्थं, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरित उपशमनार्थं, जन्मकुण्डल्यां, वर्षकुण्डल्यां, मास कुण्डल्यां, गोचरे च अरिष्ट स्थान स्थितानां सूर्यादिनवग्रह कृत सर्वविध पीडोपशान्त्यर्थं, सर्वापच्छान्ति पूर्वकं क्षेमस्थैर्य दीर्घायु: आरोग्य विपुल धन धान्य पुत्र पौत्रादि प्राप्त्यर्थं सूर्यादि नवग्रहानुकूलता प्राप्त्यर्थं, तथा इन्द्रादिदश दिक्पाल प्रसन्नता सिद्धयर्थं, धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीसत्यनारायण प्रीत्यर्थं, श्रीसत्यनारायणस्य पूजन कथा श्रवणाख्यं कर्म करिष्ये।

(संकल्प कर जल छोड़ दें)

(पुनर्जलादिकमादाय पुन: जल अक्षत लेकर गणपति आदि देवताओं के पूजन का संकल्प करें)

संकल्पिते कमर्णि दीप घण्टा शङ्खाद्यर्चन पूर्वक, तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्धयर्थं आदौश्रीगणेशाम्बिकयो: पूजनं, आचार्यादिवरणं, कलश पूजनं, तथा च मातृका, नवग्रहादि देवानां आवाहन प्रतिष्ठापन पूर्वकं यथामिलितोपचार द्रव्यै: सर्वे सांकल्पित देवानां पूजनमहं करिष्ये।

कर्मज्योति पूजन कल ा के दक्षिण भाग (ई ान भाग) में दीपक के लिये अक्षत आदि से आसन बनाकर उसपर दीपक रखकर हाथ में गन्ध, अक्षत व पुष्प लेकर आवाहन करें।

ॐ अग्ग्निर्ज्ज्योतिषा ज्ज्योतिष्मान्रुक्मो वर्च्चसाव्वर्च्चस्वान्। सहस्रदाऽअसि सहस्रायत्वा॥

ॐभूर्भुव: स्व: दीपस्थदेवतायै नम: कर्मज्योत्यै नम: आवाहयामि स्थापयामि सकलपूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना-**ॐभो दीपदेव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्म समाप्ति: स्यात् तावदत्र स्थिरो भव॥**

ॐ भूर्भुव: स्व: दीपस्थदेवतायै नम: प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

***भैरव प्रणाम*-ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥**

इस मन्त्र से महाभैरव का ध्यान करते हुए पुष्पाक्षत आदि समर्पित कर नमस्कार करें।

घण्टापूजनम् (घण्टा दीपक के दक्षिण भाग में स्थापित करें)

हाथ में गंध, अक्षत एवं पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से पूजन करें।

ॐसुपण्र्णोसिगरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ। स्तोमऽआत्माच्छन्दाᳬस्यङ्गानियजूᳬषिनाम॥ सामतेतनूर्व्वामदेव्व्यँ य्यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्या: शफा:॥ सुपण्र्णोसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छ स्व: पत॥

ॐ भूर्भुव: स्व: घण्टस्थगरुणाय नम:, सर्ववाद्यमयीघण्टाय नम: गरुडं आवहयामि स्थापयामि सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें

प्रार्थना: ॐ आगमर्थन्तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थान सन्निधौ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: घण्टस्थ गरुणाय नम: प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

शङ्ख पूजनम् शंख देवताओं के वायें भाग में स्थापित करें

हाथ में गंध, अक्षत एवं पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से शंख पूजन करें एवं एक आचमनी जल डाले॥

ॐअग्ग्निर्ऋषि: पवमान: पाञ्चज य: पुरोहित:। तमीमहे महागयम्॥ उपयामगृहीतो स्यग्नयेत्त्वा व्वर्च्चसऽएषते योनिरग्नयेत्त्वा व्वर्च्चसे॥

पुण्यस्त्वं शङ्ख पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम्। विष्णुना विधृतो नित्यं अत: शान्तिप्रदो भव॥
शङ्खं चन्द्रार्क दैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्मात् शङ्खं प्रपूजयेत्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: शङ्खस्थदेवतायै नम: शङ्खस्थदेवताम् आवहयामि स्थापयामि सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि

समर्पयामि नमस्करोमि। (शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य)

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुव :स्वः शङ्खाधिपतये नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

॥ॐ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गणेशाऽम्बिकापूजनम्

ध्यानम्

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर गणे ा और अम्बिकाजी का ध्यान करें एवं ध्यान कर अक्षत-पुष्प गणे ा और अम्बिकाजी के श्रीचरणों में छोड़ दें।

गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाश कारकं नमामिविघ्नेश्वर पादपङ्कजम्॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धासतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताःस्म परिपालयदेवि विश्वम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यायामि ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्   हाथ में अक्षत   पुष्प लेकर निम्न   लिखित मन्त्र से गणेश एवं अम्बिकाजी का आवाहन करें।

ॐगणानान्त्वागणपति   हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति   हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति   हवामहेव्वसोमम। आहमजानिगर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्॥

ॐअम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन। स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्राण-प्रतिष्ठापनम्

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्ता मों३॥ प्रतिष्ठ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।   (हाथ से स्पर्श कर प्रतिष्ठा करें)

***आसनम्*-ॐपुरुषऽएवेद   सर्व्वंय्यद्भूतँय्यच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानो यदन्ने नातिरोहति॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।   (गणेशाम्बिका के समीप आसन के निमित्त पुष्प छोड़ें।)

पाद्यम् (चरण   प्रक्षालन)   ॐ एतावानस्यमहिमा तोज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोस्य व्विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्योः पाद्यम् समर्पयामि।   (गणेशाम्बिका के चरणों का प्रक्षालन करे)

हस्तयोः अर्घ्यम् **ॐत्रिपादूद्ध्र्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः॥ ततोव्विष्ष्वङ् व्यक्क्रामत्सा शनानशनेऽअभि॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि। (गणेशाम्बिका को अर्घ्य दें)

मुखे आचमनीयम् ॐततोव्विराड जायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्य तपश्च्चाद्भूमि मथोपुरः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखे आचमनीयम् समर्पयामि। (एक आचमनी जल से मुख धुलायें)

***सर्वाङ्गेस्नानम्*–** **ॐतस्माद्यज्ज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नारण्याग्राम्याश्चजे॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सर्वाङ्गेस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से सर्वाङ्ग स्नान करायें)

***मिलित-पञ्चामृत स्नानम्*-ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृत से स्नान करायें)

***शुद्धोदकस्नानम्*-ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्शिवनोर्व्वाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान कराएँ)

***गन्धोदकस्नानम्*-ॐगन्धर्व्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातुव्विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (चन्दन मिश्रित जल से स्नान करायें)

शुद्धोदकस्नानम्–**ॐशुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षो रुणस्तेरुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽ अवलिप्तारौद्द्रानभो रूपाः पार्ज्ज या:॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

अधोवस्त्रम्– **ॐयुवासुवासाः परिवीतऽआगात् स उस्रेयान् भवति जायमानः।**
तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः अधोवस्त्रं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि। (अधोवस्त्र चढ़ायें, पुनः जल छोड़ें)

यज्ञोपवीतम्–**ॐयज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।**
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशायनमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि, करौ प्रक्षाल्य।

जनेऊ अर्पण करे॥ पुनः जल छोड़ें एवं हाथ धो लें।

उपवस्त्रम्–**ॐसुजातोज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथ मास दत्स्वः। व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूप संव्ययस्व व्विभावसो॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, करौ प्रक्षाल्य।

गणेशाम्बिका को उपवस्त्र चढ़ायें। पुनः जल छोड़ें, एवं हाथ धो लें।

गन्धम् (चन्दनम्)–**ॐ त्वाङ्गधर्व्वाऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मा दमुच्च्यत्॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनं समर्पयामि।

(चन्दन लगायें)

अक्षतान्–**ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत्। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्रते हरी॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ायें)

***पुष्पाणि-पुष्पमाल्याम्*-ॐओषधीः प्रतिमोदध्वंपुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वी रुधः पारयिष्ष्णवः॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाल्यां च समर्पयामि। (पुष्प एवं पुष्प माला चढ़ायें)

***बिल्वपत्रम्* ॐ नमोबिल्म्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिनेचनमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्या य चा हनन्न्याय च॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। (बेलपत्र चढ़ायें)

दू*र्वाङ्कुरान्*- ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ायें)

***नानापरिमलद्रव्याणि*-ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वा पुमा पुमाꣳ सम्परिपातुव्विश्श्वतः॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि। (अबीर, गुलाल हल्दी आदि चढ़ायें)

***सुगन्धित द्रव्याणि*-ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्ध नान्मृत्योर्म्मुक्षीय मा मृतात्॥ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनादितोमुक्षीय मा मुतः॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि। (इत्र

आदि चढ़ायें)

सिन्दूरम्– **सिन्धोरिवप्प्राध्वने शूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः।**
घृतस्यधाराऽअरुषो नव्वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पि वमानः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

(सिन्दूर चढ़ायें)

धूपम्–**ॐधूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंधूर्व्वतंय्योस्मान् धूर्व्वतितंधूर्व्वयं व्वयन्धूर्व्वामः। देवानामसिव्वह्नितम सस्नितमं पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्॥** ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं आघ्रापयामि। (धूप अर्पण करें)

दीपम्–**ॐ चन्द्रमामनसोजा तश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत। श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रत्यक्ष दीपंदर्शयामि, आचमनं समर्पयामि।

(दीपक के समीप चावल छोड़कर हाथ धो लें)

नैवेद्यम्–**ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्प्पयन्॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि,

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्।

भोग लगाएँ तदनन्तर धेनु मुद्रा से अमृती करण करें एवं योनिमुद्रा दिखायें तथा घण्टी बजायें। पश्चात् पञ्चग्रास मुद्रा दिखाकर प्रत्येक मुद्रा में जल छोड़ते जायँ।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। मध्ये मध्ये

पानीयं उत्तरा पोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

***ऋतुफलम्*-ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चत्वꣳ हसः॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलं समर्पयामि। (ऋतु फल चढ़ायें)

***मुखवासार्थे ताम्बूलम्*-ॐ यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमत वत। व्वसन्तोऽस्यासीदा ज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को पान, सुपाड़ी, लौंग और इलायची चढ़ायें।

***श्रीफलम् (नारिकेल फलम्)*-ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण॥**

22

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः श्रीफलं समर्पयामि।

(नारियल चढ़ायें)

***दक्षिणा द्रव्यम्* ॐ हिरण्य गर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवायहविषा व्विधेम॥**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

(दक्षिणा चढ़ायें)

विशेषार्घ्यम् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, दक्षिणा एक पात्र में एकत्रित कर गणे जी एवं गौरीजी को वि षार्घ्य चढ़ायें।

ॐरक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥

अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

हस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा प्रार्थनां कुर्यात्

गणपति परिवारं चारुकेयूरहारं, गिरिधरवरसारं योगिनी चक्रचारम् ।
भव-भय-परिहारं दुःख दारिद्र्यदूरं गणपतिमभिवन्दे वक्र तुण्डावतारम्॥
मुखे ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्चीशाटी पृथुकटितटे हाटकमयी
भजामिस्त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्॥
ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

समर्पणम् अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम। हाथ में जल लेकर गणेशाम्बिकाजी के श्रीचरणों में छोड़े दे॥

✡✡✡

कलश पूजनम्

सर्वप्रथम कलश में रोली से स्वस्तिक बनाकर व कलश के गले में तीन धागे वाली मौली (कच्चा सूत्र) लपेटकर पूजन कर्ता को अपनी बायीं ओर अबीर आदि से अष्टदल कमल बनाकर उसपर सप्तधान्य (जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवा) या चावल अथवा गेहूँ या जौ रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित करें।

उस स्थापित कलश में जल डाल दें। तदनन्तर कलश में यथोपलब्ध सामग्री-चन्दन, सर्वौषधी, हल्दी, दूर्वा, कुश, सप्तमृत्तिका, (घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी, नदियों के संगम, तालाब, राजा के द्वार और गोशाला-इन सात स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका कहते हैं) सुपारी, पञ्चरत्न, (सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम) तथा दक्षिणा भी छोड़ें। तदुपरान्त पञ्चपल्लव (बरगद, गूलर, पीपल, आम तथा पाकड़ के नये और कोमल पत्ते) छोड़ें।

तत्पश्चात्-कलश को वस्त्र से अलंकृत करें तथा कलश के ऊपर चावल से भरे पूर्णपात्र को रखें और उस पर लाल कपड़े से वेष्टित नारियल को भी रखें। नारियल के अभाव में सुपारी अथवा फल रखें।

वरुणम् आवाहयेत्

कलश में सर्वप्रथम जल के अधिपति वरुणदेव का अक्षत पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र के द्वारा आवाहन करें।

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्तेयजमानोहविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं स शक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐअपांपतये वरुणाय नमः। इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य। (चावल फूल छोड़कर, वरुणदेव की पञ्चोपचार से पूजा करें)

कलशस्थित देवानां नदीनां तीर्थानां च आवाहनम्

तदनन्तर अन्य देवी-देवताओं का हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करें-

ॐकलाकला हि देवानां दानवानां कला कलाः। संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी। अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥
कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी। तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा पराः। पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
अत्र गायत्री सवित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः॥

(हाथ के अक्षत-पुष्प कलश पर चढ़ा दें)

प्रतिष्ठापनम्-ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञः समिमन्दधातु ॥ विश्श्वेदेवासऽ इहमा दयन्तामों३॥ प्रतिष्ठ ॥

कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

अक्षत-पुष्प छोड़ते हुए कलश की प्रतिष्ठा करें, एवं विविध उपचारों से वरुणदेव का सविधि पूजन करें।

कलशे वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः। षोडशोपचारैःपूजनम् कुर्यात्। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। मुखेआचमनीयं जलं समर्पयामि। सर्वाङ्गेस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। हस्तौप्रक्षाल्य। यज्ञोपवीतं

समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

कलश प्रार्थना

पूजनोपरान्त हाथ में पुष्प लेकर इस प्रकार प्रार्थना करें-

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव। सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक। यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव॥

ॐभूर्भुवः स्वः कलशोपरि सर्वेआवाहित देवताभ्यो नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि।

समर्पणम्ः-अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्तां, न मम।

✡✡✡

षोडशमातृका पूजनम्

१५. आत्मनः कुलदेवता ✡	१२. लोकमातरः ✡	८. देवसेना ✡	४. मेधा ✡
१५. तुष्टि ✡	११. मातरः ✡	७. जया ✡	३. शची ✡
१४. पुष्टिः ✡	१०. स्वाहा ✡	f. विजया ✡	२. पद्मा ✡
१३.ध तिः ✡	९. स्वधा ✡	५. सावित्री ✡	१. गौरी ✡ गणेश

षोडश मातृकाओं के लिये सोलह कोष्ठवाला एक चौकोर मण्डल बनायें। उन सोलह कोष्ठकों में पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः निम्नलिखित नाम मन्त्रों से आवाहन करें।

(१) ॐ गौर्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (२) ॐपद्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (३) ॐशच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (४) ॐमेधायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (५) ॐसावित्र्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (६) ॐविजयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (७) ॐजयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (८) ॐदेवसेनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (९) ॐस्वधायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (१०) ॐ स्वाहायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (११) ॐ मातृभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि। (१२) ॐ लोकमातृभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि। (१३) ॐ धृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (१४) ॐ पुष्टयै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (१५) ॐ तुष्टयै नमः आवाहयामि स्थापयामि। (१६) ॐ आत्मनः कुलदेवतायै आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्–ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु। व्विश्श्वेदेवासऽ इहमा दयन्तामोंꣳ॥ प्रतिष्ठ ॥

गणेश सहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

'गणेश सहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य।

इस नाम मन्त्र से गन्ध–अक्षत आदि उपचारों के द्वारा पूजन करें और निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें।

गौरी पद्मा शची मेधा साविन्त्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनःकुलदेवता। गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

ॐभूर्भुवः स्वः गणेश सहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

समर्पण–अनया पूजया गणेश सहितगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम–कहकर मण्डलपर जल छोड़ दें और पुनः प्रणाम करें।

सप्तघृतमातृका पूजनम्

सप्तघृतमातृका

श्रीः
0
0 0
0 0 0
0 0 0 0
0 0 0 0 0
0 0 0 0 0 0
0 0 0 0 0 0 0

श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा तथा सरस्वती ये सात (सप्तघृत) मातृकाएँ कहलाती हैं। इनके पूजन के लिये किसी वेदी अथवा पाटे पर प्रादेशमात्र स्थान में पहले रोली या सिन्दूर से स्वास्तिक बनाकर ॥श्रीः॥ लिखें।

इसके नीचे एक बिन्दु और उसके नीचे दो बिन्दु, इसी प्रकार क्रमशः तीन, चार, पाँच, छः बिन्दु बनाते हुए सबसे नीचे सात बिन्दु बनायें। यह सप्तघृतमातृका मण्डल है। इन्हें गरम घी की सात धाराएँ भी देनी चाहिये।

तदनन्तर नीचे लिखे नाम मन्त्रों से अक्षत-पुष्प लेकर आवाहन करें-

ॐश्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐलक्ष्म्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐधृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐमेधायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐस्वाहायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐप्रज्ञायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐसरस्वत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्-ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञᳯ समिमन्दधातु। व्विश्श्वेदेवासऽ इहमा दयन्तामोंᳫ प्रतिष्ठ॥ सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

तदनन्तर **'सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः'** इस मन्त्र द्वारा गन्धादि उपचारों से पूजन करें, एवं निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें-

ॐश्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताघृतमातरः। प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि॥

समर्पण 'अनया पूजया वसोर्धारादेवताः प्रीयन्तां, न मम' कहकर मण्डल पर जल छोड़ दें और पूजन कर्म को समर्पित कर दें।

नवग्रह मण्डलम्

नवग्रह-पूजन

ग्रहों के स्थापन के लिये किसी वेदी अथवा पाटेपर नौ कोष्ठकों का एक चौकोर मण्डल बनायें। बीचवाले कोष्ठक में सूर्य, अग्निकोण के कोष्ठक में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशानकोण के कोष्ठक में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्यकोण के कोष्ठक में राहु और वायव्यकोण के कोष्ठक में केतु की स्थापना करें।

ग्रहों का आवाहन–हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूर्यादि ग्रहों के नाम मन्त्रों से पूर्वोक्त कोष्ठकों में नौ ग्रहों का पृथक्-पृथक् आवाहन-स्थापन करें और अक्षत-पुष्प छोड़ते जायँ–

(१) ॐ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि। (२) ॐ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

(३) ॐ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि। (४) ॐ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि।

(५) ॐ गुरवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि। (६) ॐ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

(७) ॐ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमाहयामि स्थापयामि। (८) ॐ राहवे नमः राहुमाहयामि स्थापयामि ।

(९)ॐ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि। ॐ अधिदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐप्रत्यधिदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐदसदिक्पालेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐपञ्चलोकपाल देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि।

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण कर ग्रहों को प्रतिष्ठित करें और मण्डल पर अक्षत छोड़ दें।

प्रतिष्ठापनम्–ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञः समिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽ इहमा दयन्तामोंं३॥ प्रतिष्ठ॥

अस्मिन् नवग्रह मण्डले आवाहिताः सूर्यादिनवग्रहदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

निम्नलिखित नाम मन्त्र से गन्ध-अक्षत आदि पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार द्रव्यों से पूजन करें।

ॐभूर्भुवः स्वः सूर्यादिनवग्रह देवताभ्यो नमः।

पूजनोपरान्त हाथ जोड़कर प्रार्थना करें

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः,
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं,
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः॥

ॐभूर्भुवः स्वः सूर्यादिनवग्रह देवताभ्यो नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

इसके बाद निम्नलिखित वाक्य उच्चारण करते हुए नवग्रहमण्डल पर जल छोड़ दें और नमस्कार करें-

'अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम।'

तदनन्तर प्रधान देवता श्रीसत्यनारायण (श्रीशालग्राम) भगवान् का पूजन आगे दी गयी विधि के अनुसार करें।

✡✡✡

श्रीशालग्राम एवं सत्यनारायणपूजन

श्रीशालग्राम साक्षात् श्रीसत्यनारायण भगवान् हैं, शालग्राम-शिला में प्राण-प्रतिष्ठा आदि संस्कारों की आवश्यकता नहीं होती। श्रीशालग्रामजी की पूजा में आवाहन और विसर्जन भी नहीं होता। इनके साथ भगवती तुलसी का नित्य संयोग माना गया है। शयन के समय तुलसी पत्र को शालग्राम-शिला से हटाकर पार्श्व (बगल) में रख दिया जाता है। जहाँ शालग्राम-शिला होती है, वहाँ सभी तीर्थ और भुक्ति-मुक्ति का निवास होता है। शालग्राम भगवान् का चरणोदक सभी तीर्थों से अधिक पवित्र माना गया है। स्त्री, शूद्र एवं अनुपनीत ब्राह्मण आदि को शालग्राम-शिला का स्पर्श नहीं करना चाहिये। ऐसी स्थिति में प्रतिनिधिरूप में यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण के द्वारा यह पूजा करानी चाहिये अथवा प्रतिमा या चित्रपट की पूजा करनी चाहिये, चित्रपट में उक्त नियम नहीं हैं।

ध्यानम्

हाथ में पुष्प लेकर श्रीसत्यनारायण (शालग्राम) भगवान् का ध्यान करें

वैकुण्ठे कमनीयरत्नखचिते कल्पद्रुमूले स्थितं, नीलेन्दीवरकान्तिसुन्दरतनुं लक्ष्म्या समालिङ्गितम्।
गङ्गानीर तरङ्ग भूषितपदद्वन्द्वं कृपासागरं, कोटीरीकृतबर्हिषि पिच्छमनिशं लक्ष्मीपतिं भावये।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि (श्रीसत्यनारायणजी के सामने पुष्प रख दें)

आवाहनम्- ॐसहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिः सर्व्व तस्पृत्त्वा त्त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम्॥

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं सन्निधौ भव ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (आवाहन के निमित्त पुष्प छोड़ें)

आसनम्-ॐपुरुषऽ एवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतँय्यच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानो यदन्ने नाति रोहति ॥

स्फुरत्प्रभं काञ्चनपूरपूरितं शशाङ्कभाविन्दुसमेतमेतत्। हृत्पद्मतुल्यं विधिवन्मयाहृतं लक्ष्मीपते तुभ्यमिदं वरासनम्

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः आसनार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि। (आसन के निमित्त अक्षत् छोड़ें)

पाद्यम्- ॐएता वानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि (चरणों के प्रक्षालन के निमित्त जल छोड़ें)

हस्तयोः अर्घ्यम्-ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततोव्विष्वङ्व्यक्क्रा मत्साशना नशनेऽअभि॥

पाटीरपूरितकनेकविधैः शुभैश्च दूर्वादलैश्च परिभूषितमेतमीश।

लक्ष्मीपते ननु गृहाण करार्घमेहि भक्ताश्च पूरय निकामसकामकामैः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (हाथ में जल लकर अर्य दें)

मुखे आचमनीयम्-ॐततोव्विराड जायत व्विराजोऽअधिपूरुषः। सजातोऽअत्त्यरिच्च्य तपश्चाद्भूमि मथोपुरः॥

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि। (मुख प्रक्षालन के निमित्त एक आचमनी जल छोड़ें)

सर्वाङ्गेस्नानम्-ॐतस्मा द्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृष दाज्ज्यम्। पशूँताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नारण्या ग्राम्याश्चजे ॥

परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये। साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयामि प्रसीद मे ॥

गङ्गा-सरस्वती-रेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः। स्नापितोसि महाविष्णुः अतः शान्तिं कुरुष्व मे ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः समर्पयामि (सम्पूर्ण स्नान कराएँ)

पयः स्नानम्-ॐपयः पृथिव्याम्पयऽओषधी षुपयो दिव्व्यन्त रिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्य्यम्॥

गोक्षीर स्नानं देवेश गोक्षीरेण मया कृतम्। स्नपनं देव देवेश गृहाण परमेश्वर॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि, पयः स्नानान्तेशुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दूध से स्नान कराएँ, उपरान्त शुद्धजल से स्नान कराएँ।

दधिस्नानम्-ॐ दधिक्राव्व्णोऽअकारिषं जिष्णणो रश्श्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्त्प्रणऽआयूंश्ँषि तारिषत्॥

दध्ना चैव महाविष्णुः स्नपनं क्रियते धुना। गृहाण श्रद्धया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः दधि-स्नानं समर्पयामि, दधि स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नान कराएँ, उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

घृतस्नानम्-ॐघृतम्मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितो घृतम्व्वस्यधाम। अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभव्वक्षि हव्व्यम् ॥

सर्पिषा च मया देव स्नपनं क्रियते धुना। गृहाण श्रद्धयादत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घी से स्नान कराएँ, उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

मधुस्नानम्-ॐमधुव्वाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्क्त मुतोषसो मधुमत्त्पार्थिवꣳ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२॥ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥

इदं मधु मया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च। गृहाण त्वं हि देवेश मम शान्तिप्रदो भव॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शहद से स्नान करायें। उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

शर्करास्नानम्-ॐअपाᳬं रस मुद्वयसᳬ सूर्य्ये सन्तᳬ समाहितम्। अपाᳬं रसस्ययो रसस्तम्वो गृह्णाम्म्युत्त ममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्॥

सितया देव देवेश स्नपनं क्रियते धुना। गृहाण श्रद्धया दत्तां सुप्रसन्नो भव प्रभो॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा से स्नान करायें, उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

मिलित-पञ्चामृत स्नानम्ः-ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्॥

दध्ना घृतेन पयसा मधुनाम्बुमिश्रं गङ्गोदकेन तुलसीसहितेन रम्यम्।
पञ्चामृतं त्रिभुवनाधिपदेहशुद्ध्यै स्नानार्हमेतदतिपूततमं गृहाण॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृत से स्नान कराएँ।)

शुद्धोदकस्नानम्-ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

एतत्तमालदलनीं कलिन्दजाया आनीतमम्बु नितरां तव मोदकारि।
हे वैनतेय भुजसंस्थितलभ्यधीश निर्णेजनाय दयया भगवन् गृहाण॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्धजल से स्नान कराएँ।)

महाभिषेक स्नानम्

दूध में तुलसीपत्र डालकर शालग्रामजी का महाभिषेक करें।

हरि÷ॐ॥ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्त्वा त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुषऽ एवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतँय्यच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानोयदन्ने नातिरोहति ॥२॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोस्यव्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥ त्रिपादूद्ध्र्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः॥ ततोव्विख्वङ् व्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततोव्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्य तपश्चाद्भूमि मथोपुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँताँश्चक्क्रेव्वायव्व्या नारण्याग्राम्याश्चजे ॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥ तस्मादश्श्वाऽअजायन्त येकेचो भयादतः॥ गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥८॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्प्पुरुषञ्जात मग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्चये ॥९॥ यत्पुरुषम्व्व्यदधुः कतिधाव्व्य कल्प्पयन् ॥ मुखङ्किमस्या सीत्किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्च्येते ॥१०॥ व्ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत॥११॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥१२॥ नाब्भ्याऽआसी दन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ अकल्प्पयन् ॥१३॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञ मतन्वत॥ व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्तास्या सन्परिध यस्त्रिः सप्प्त समिधःकृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषम्पशुम् ॥१५॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः॥१६॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः महाभिषेक स्नानं समर्पयामि। महानारायणार्पणमस्तु॥

शुद्धोदकस्नानम्–ॐशुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्वि नाः। श्श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्द्रानभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि स्नानं च प्रतिगृह्यताम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान करायें)

अधो-वस्त्रम्-ॐयुवासुवासाः परिवीतऽआगात्। सऽउश्रेसान् भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रति गृह्यताम्॥

ब्रह्माण्डमेतत् दययाप्यखण्डं सम्पन्नमेभिर्वसनैस्तनोषिः। तस्मै प्रदेयः किमुवस्त्र खण्डः तथापि भावोऽस्तु परीक्षणाय॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः अधोवस्त्रं समर्पयामि। (अधोवस्त्र चढ़ायें और थोड़ा सा जल छोड़ें)

यज्ञोपवीतम्-ॐतस्मादश्वाऽअजायन्तये केचोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥

प्रजापतेरेव समं गृहीतजन्मातिपूतं द्विजचिह्नभूतम्। यज्ञोपवीतं भवदर्थमीश संपादितं धारयमोदयास्मान्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः ब्रह्मसूत्रं समर्पयामि। (जनेऊ चढ़ायें और थोड़ा सा जल छोड़ें)

उपवस्त्रम्-ॐसुजातो ज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथ मासदत्स्वः। व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो॥

श्रद्धातुरीर्यत्र मनस्तु सूत्रं भक्तिश्च वेमामति तानयुग्मम्। ह्लकौलिको मे विमलोत्तरीयं तनोमि तत्ते तनु कल्पवल्याम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनम्। उपवस्त्र चढ़ायें और थोड़ा सा जल छोड़ें।

गन्धम् (चन्दनम्)-ॐतंय्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जात मग्रतः। तेनदेवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्चये॥

पाटीरसम्भूतमभूतपूर्वसौगन्ध्यसम्बन्धुरमेतदीश। लक्ष्मीपते चन्दन चर्चनं ते मोदाय भालेऽर्पितमस्तु वस्तु॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः चन्दनम् समर्पयामि। (चन्दन लगायें)

पुष्पाणि पुष्पमाल्यां च-ॐओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्श्वाऽइव सजित्त्वरीर्व्वी रुधः पारयिष्ण्णवः॥

माल्यादीनिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानिपुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः पुष्पाणि पुष्पमाल्यां च समर्पयामि। (पुष्प एवं पुष्प माला चढ़ायें)

तुलसी पत्रम्—यत्पुरुषम्व्व्यदधुः कतिधाव्व्य कल्प्पयन्। मुखङ्किमस्या सीत्किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्च्येते॥

सुगन्धवल्ली शतपत्रजाती सुवर्ण-चम्पा-वकुलोद्भवानि। गृहाणदेवेश मयार्पितानि प्रभोहरे श्रीतुलसी दलानि॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः तुलसीदलं समर्पयामि। (तुलसी दल चढ़ायें)

तदनन्तर केशव आदि चौबीस नामों से तुलसीदल चढ़ाएँ

ॐकेशवाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐमाधवाय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐमधुसूदनाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐवामनाय नमः। ॐश्रीधराय नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐपद्मनाभाय नमः। ॐदामोदराय नमः। ॐसङ्कर्षणाय नमः। ॐवासुदेवाय नमः। ॐअनिरुद्धाय नमः। ॐपुरुषोत्तमाय नमः। ॐअधोक्षजाय नमः। ॐनारसिंहाय नमः। ॐअच्युताय नमः। ॐजनार्दनाय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐहरये नमः। ॐकृष्णाय नमः। ॐप्रणवाय नमः।

अभूषणम्-ॐयुवन्तमिन्द्रा पर्व्वता पुरोयुधायोनःपृतन्न्या दपतन्त मिद्धतं व्वज्ज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरेचत्ताय यच्छन्त्सद्‌गहनैँय्यदि नक्षत्॥ अस्म्माकᳬ शत्रून्न्परि शूरव्विश्शवतो दर्म्मा दर्षीष्टव्विश्श्वतः॥ भूर्ब्भुवः स्वः सुप्प्रजाः प्रजाभिः स्यामसुवीराव्वीरैः सुपोषाः पोषैः॥

वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रुम मण्डितम्। पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः अलङ्करणार्थे आभूषणानि समर्पयामि। (आभूषण चढ़ायें)

नानापरिमलद्रव्याणि-ॐअहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्शवा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाᳬ सम्परिपातु व्विश्शवतः॥

श्वेतचूर्ण रक्तचूर्ण हरिद्राकुंकुमान्वितैः। नानापरिमल द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वर॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (अबीर, गुलाल हल्दी आदि चढ़ायें)

सुगन्धित द्रव्याणिः-ॐत्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मा मुतः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि। (इत्र आदि सुगन्धित द्रव्य चढ़ायें)

धूपम्-ॐव्ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याᳪ शूद्रोऽअजायत॥ सौरम्यमानन्दकरं यदीयं यदीयधूपोऽपि विधूतधूमः। एषोऽस्ति धूपो ज्वलते पुरस्ते मोदावहो माधव जिघ्र जिघ्र॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः धूपं आघ्रापयामि। (धूप दिखायें)

दीपम्-ॐचन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्चमुखादग्निरजायत॥ सद्वर्ति सम्पूरित एष दीप आलोककारी तमसां विदारी। प्रज्वालितः स्नेहमये सुपात्रे लक्ष्मीपते चन्द्रमसं गृहाण॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः दीपं दर्शयामि। धूप दीपान्ते आचमनीयं जलं सर्पयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

दीपक दिखायें और एक आचमनी जल छोड़कर हाथ धो लें।

नैवेद्यम्-ॐनाभ्याऽआसी दन्तरिक्षᳪ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ अकल्प्पयन्॥ व्यतीतयामं नवनीतमेतद् द्राक्षादिरम्भासित शर्करा च। निधाय रम्ये कनकस्थपात्रे दत्तं तु नैवेद्यमिदं गृहाण॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि। धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्।

श्रीसत्यनारायणजी के सामने भोग में तुलसीदल रख कर निवेदन करें एवं जल छोड़ें। धेनु मुद्रा से अमृती करण करें

एवं योनिमुद्रा दिखायें और घण्टी बजायें। पश्चात् पञ्चग्रासमुद्रा दिखाकर प्रत्येक मुद्रा में जल छोड़ते जायँ।

ॐप्राणाय स्वाहा। ॐअपानाय स्वाहा। ॐव्यानाय स्वाहा। ॐउदानाय स्वाहा। ॐसमानाय स्वाहा। मध्ये-मध्ये पानीयं उत्तरा पोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य। (सम्मुख में पाँच बार जल छोड़ें और हाथ धो लें)

ऋतुफलम्-ॐयाः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चत्व हसः॥

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः ऋतुफलम् समर्पयामि। (ऋतुफल (केला आदि) चढ़ायें)

मुखवासार्थे ताम्बूलम्-ॐयत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञ मतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥

पूगीसुधैर्लाघनसारदेव पुष्पैरुपेतं मुखमण्डनं यत्। विहारहार्यं नवरङ्गगर्भं गृहाण ताम्बूलमिदं मदर्पितम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः मुखवासार्थे सफल ताम्बूलम् समर्पयामि। (पान, सुपाड़ी, लौंग और इलायची चढ़ायें)

नारिकेल फलम्-ॐश्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्च पत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः नारिकेलफलम् समर्पयामि। (नारियल चढ़ायें)

दक्षिणा द्रव्यम् :-**ॐहिरण्यगर्ब्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्म्मै देवाय हविषाव्विधेम॥**

आतन्वसे त्वं करुणां जगत्यां इमां ददत्ते वत लज्जितोऽस्मि। मय्येव तावत्करुणां वितन्यतां दक्षिणा मेकलयाशु नाथ॥

दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता। अनन्त फलदामेन गृहाण परमेश्वर॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (दक्षिणा (रुपये) चढ़ायें)

-:प्रार्थना:-

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा प्रार्थनां कुर्यात्

फुल्लेन्दीवर कान्तिमिन्दुवदनं वर्हावतंसप्रियं, श्रीवत्साङ्कमुदार कौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतं, गोविन्दं कल वेणुनादन परं दिव्याङ्ग भूषं भजे॥
स शङ्ख चक्रं सकरीटकुण्डलं स पीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहार वक्षःस्थल कौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसाश्चतुर्भुजम् ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीसत्यनारायणाय नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि, प्रणमामि मुहुर्मुहुः।

सरस्वती पूजनम्

गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य तथा दक्षिणा आदि उपचारों से भगवती सरस्वती की निम्नमन्त्र से पूजा करें।

ॐ नमोदेव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम्॥

श्रीसरस्वत्यै नमः सकलपूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एवं तदुपरान्त निम्नमन्त्र से ब्राह्मण देवता को चन्दन कलावा एवं दक्षिणा समर्पित कर पूजन करें।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

तदनन्तर बड़ी श्रद्धा के साथ भगवान् श्रीसत्यनारायण की कथा का श्रवण एवं मनन करें।

*****

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। श्रीपरमात्मने नमः ।।

श्रीसत्यनारायण व्रतकथा

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीसत्यनारायणव्रत की महिमा तथा व्रत की विधि

श्रीव्यास उवाच

एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः। पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु।।१।।

श्रीव्यासजी ने कहा–एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में शौनक आदि अठ्ठासी हजार सभी ऋषियों तथा मुनियों ने पुराण एवं शास्त्र के ज्ञाता श्रीसूतजी महाराज से पूछा–।।१।।

ऋषय ऊचुः

व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वाञ्छितं फलम् । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने।।२।।

ऋषियों ने कहा–हे महामुने! आप तो इतिहास एवं पुराणों के ज्ञाता है। अतः आपसे एक निवेदन है, कि इस कलियुग में वेद विद्या से रहित मनुष्यों को प्रभु भक्ति किस प्रकार से प्राप्त हो, तथा उनका उद्धार कैसे होगा? इसलिये हे मुनिश्रेष्ठ! कोई ऐसा तप कहें, कोई ऐसा व्रत कहें, कोई ऐसा अनुष्ठान कहें, जिससे थोड़े ही समय में पुण्य मिल सके और मनोवाञ्छित फल की भी प्राप्ति हो सके। हमारी सुनने की प्रबल इच्छा है।।२।।

सूत उवाच

नारदेनैव सम्पृष्टो भगवान् कमलापतिः । सुरर्षये यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः ।।३।।

एकदा नारदो योगी परानुग्रहकाङ्क्षया। पर्यटन् विविधान् लोकान् मर्त्यलोकमुपागतः।।४।।

ततोदृष्ट्वा जनान्सर्वान् नानाक्लेशसमन्वितान्। नानायोनिसमुत्पन्नान् क्लिश्यमानान् स्वकर्मभिः।।५।।

केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम् । इति संचिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा।।६।।

सर्वशास्त्र ज्ञाता श्रीसूतजी ने कहा—हे ऋषियो! आप सबने सभी प्राणियों के हित के लिये यह बात पूछी है, क्योंकि परोपकार ही तो संतों का लक्षण है। इसलिये उस श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों से कहूँगा जिस व्रत को नारद जी ने भगवान कमलापति से पूछा था। एक समय योगिराज नारद जी (परानुग्रह कांक्षया) दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुए मृत्यु लोक में आ पहुँचे। वहाँ अनेक योनियों में जन्में प्राणी अपने कर्मों के द्वारा अनेकों दुःखों से पीड़ित हैं, ऐसा देखकर नारद जी ने मन में विचार किया कि किस यत्न से इन प्राणियों के दुःख का नाश हो। ऐसा मन में विचार कर विष्णु लोक को गये—।।३—६।।

तत्र नारायणं देवं शुक्लवर्णं चतुर्भुजम् । शंख-चक्र-गदा-पद्म-वनमाला-विभूषितम्।।७।।

दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे।

वहाँ श्वेत वर्ण और चार भुजाओं वाले सबके आधार भगवान् नारायण को देखा। जिनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म तथा गले में वनमाला सुशोभित है। नारदजी ने श्रीविग्रह के दर्शन कर सुन्दर स्तुति करने लगे।।७१/२।।

नारद उवाच

नमो वाङ्ममनसातीतरूपायानन्तशक्तये॥८॥

आदिमध्यान्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने। सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने॥९॥

श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत।

नारदजी बोले–हे भगवन्! आप अत्यन्त शक्ति से सम्पन्न हैं। मन तथा वाणी भी आपको नहीं पा सकती, आपका आदि, मध्य, अन्त भी नहीं है। निर्गुण स्वरूप सृष्टि के आदिभूत एवं भक्तों के दु:खों को नष्ट करने वाले आप हैं, भगवन् मेरा नमन् स्वीकार करें। नारदजी की स्तुति सुनकर भगवान् नारायण ने नारद जी से पूछा॥८–९१/२॥

श्रीभगवानुवाच

किमर्थमागतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्तते । कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते॥१०॥

श्रीभगवान् ने कहा–हे मुनिश्रेष्ठ! आपके मन में क्या है। आपका यहाँ किस काम के लिये आगमन हुआ है। नि:संकोच कहो, मैं सब कुछ बताऊँगा॥१०॥

नारद उवाच

मर्त्यलोके जना: सर्वे नानाक्लेशसमन्विता: । नानायोनिसमुत्पन्ना:पच्यन्ते पापकर्मभि:॥११॥

तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद्वद । श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि॥१२॥

नारदजी ने कहा–हे प्रभु! मृत्युलोक में प्राय: अपने-अपने पाप कर्मों के द्वारा विभिन्न योनियों मे उत्पन्न

सभी लोग अनेक प्रकार के दुःखों से दुःखी हो रहे हैं। हे नाथ! यदि आप मुझ पर दया रखते हैं तो बतलायें कि उन मनुष्यों के सब दुःख थोड़े ही प्रयत्न से कैसे दूर हों।।११-१२।।

श्रीभगवानुवाच

साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकांक्षया। यत्कृत्वा मुच्यते मोहात् तच्छृणुष्व वदामि ते।।१३।।
व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम् । तव स्नेहान्मया वत्स प्रकाशःक्रियतेऽधुना।।१४।।
सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग्विधानतः । कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात्।।१५।।
तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्।।

भगवान् श्रीहरि ने कहा—हे नारद! मनुष्यों की भलाई के लिये आपने बहुत अच्छी बात पूछी है। जिस व्रत के करने से प्राणि मोह से मुक्त हो जाता है, सो मैं उस महान् शक्तिशाली व्रत को कहता हूँ, श्रीसत्यनारायण भगवान् का व्रत महान् पुण्य देने वाला तथा स्वर्ग एवं मृत्युलोक में अत्यन्त दुर्लभ है। श्रीसत्यनारायणजी का व्रत पूर्ण विधि विधान से करने पर मनुष्य मृत्युलोक में सुख भोग कर अन्त में शरीर छोड़कर मोक्ष को प्राप्त होता है। भगवान् के श्रीमुख से वचन सुनकर, नारद जी ने पूछा—।।१३—१५१/२।।

नारद उवाच

किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद् व्रतम्।।१६।।
तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं व्रतं प्रभो।।

नारदजी ने कहा—हे प्रभो! सत्यव्रत का फल क्या है? क्या विधान है? किसने सत्यव्रत को किया है?

तथा किस दिन सत्यव्रत को करना चाहिये। सब विस्तार से हमारी सुनने की अभिलाषा है।।१६१/२।।

श्रीभगवानुवाच

दुःखशोकादिशमनं धनधान्यप्रवर्धनम्।।१७।।

सौभाग्यसंततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम्। यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः।।१८।।

सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे। ब्राह्मणैर्बान्धवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः।।१९।।

नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं भक्ष्यमुत्तमम्। रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्।।२०।।

अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा। सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत्।।२१।।

श्रीभगवान् ने कहा—नारद! दुःख, शोक आदि को दूर करने वाला धन-धान्य को बढ़ाने वाला, सौभाग्य तथा सन्तान को देने वाला, सभी स्थानों पर विजयश्री दिलाने वाला—भक्ति और श्रद्धा के साथ किसी भी दिन मनुष्य श्रीसत्यनारायण की कथा शाम के समय ब्राह्मणों एवं बन्धुओं के साथ धर्मपारायण होकर पूजा करें। भक्ति भाव से सवाया मात्रा में नैवेद्य, केले का फल, घी, दूध, और गेहूँ का चूर्ण लेवे। गेहूँ के अभाव में साठी का चूर्ण, शक्कर तथा गुड़ लें और सब भक्षण योग्य पदार्थ एकत्रित करके भगवान् सत्यनारायण को अर्पण करना चाहिये।।।१७-२१।।

विप्राय दक्षिणां दद्यात् कथां श्रुत्वा जनैः सह। ततश्च बन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत्।।२२।।

प्रसादं भक्षयेद् भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत्। ततश्च स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन्।।२३।।

एवं कृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्। विशेषतः कलियुगे लघूपायोऽस्ति भूतले॥२४॥

बन्धु बान्धवों के साथ श्रीसत्यनारायण कथा सुनकर ब्राह्मणों को भोजन करायें एवं दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। तदुपरान्त बन्धु-बान्धवों सहित स्वयं भी भोजन करें। नृत्य-गीत आदि का आचरण कर श्रीसत्यनारायण भगवान् का स्मरण कर रात्रि व्यतीत करें। इस तरह से व्रत करने पर मनुष्यों की इच्छायें निश्चय ही पूर्ण होती हैं। विशेष कलिकाल में मृत्यु-लोक में यही इच्छा पूर्ति एवं मोक्ष का सरल सा उपाय है॥२२-२४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां प्रथमोऽध्यायः ॥

॥ इस प्रकार श्रीस्कन्दपुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्रीसत्यनारायण व्रतकथा का यह पहला अध्याय पूरा हुआ ॥१॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

निर्धन ब्राह्मण तथा लकड़हारे की कथा

सूत उवाच

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विजाः। कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोऽतिनिर्धनः॥१॥
क्षुतृड्भ्यां व्याकुलोभूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले। दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान् ब्राह्मणप्रियः॥२॥
वृद्धब्राह्मण रूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात्। किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः॥३॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विज सत्तम।

सूतजी बोले—हे द्विजो! जिसने पहले समय में इस व्रत को किया है, उसका इतिहास कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो। एक सुन्दर काशीपुरी नाम की नगरी में एक अति निर्धन ब्राह्मण रहता था, वह ब्राह्मण भूख और प्यास से व्याकुल हुआ नित्य ही पृथ्वी पर घूमता था। ब्राह्मणों से प्रेम करने वाले (ब्राह्मण प्रियः)भगवान् श्रीविष्णुजी ने ब्राह्मण को दुखी देखकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर उसके पास जाकर आदरपूर्वक पूछा—हे विप्र! नित्य दुःखी होकर पृथ्वी पर क्यों घूमते हो? हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वह सब मुझसे कहो मैं सुनना चाहता हूँ॥ १—३१/२॥

ब्राह्मण उवाच

ब्राह्मणोऽति दरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम्॥४॥
उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो।

ब्राह्मण बोला—हे प्रभो! मैं बहुत निर्धन ब्राह्मण हूँ, भिक्षा के लिये ही पृथ्वी पर घूमता हूँ (भिक्षार्थं वै

भ्रमे महीम्)। हे भगवन्! आप इस निर्धनता (दरिद्रता) से छुटकारा दिलाने वाला कोई उपाय जानते हों तो कृपा पूर्वक बतलाइये।।४१/२।।

वृद्धब्राह्मण उवाच

सत्यनारायणो विष्णुर्वाञ्छितार्थफलप्रदः।।५।।

तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम। यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः।।६।।

विधानं च व्रतस्यापि विप्रायाभाष्य यत्नतः। सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवान्तरधीयत।।७।।

तद् व्रतं संकरिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै। इति संचिन्त्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रा न लब्धवान्।।८।।

वृद्धब्राह्मण रूपधारी भगवान् श्रीविष्णुजी ने कहा—हे ब्राह्मणदेव! भगवान् सत्यनारायण मनोवाञ्छित फल देने वाले हैं। इसलिये हे विप्र! तुम सत्यनारायण का व्रत एवं पूजन करो, सत्यव्रत करने से मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त होता है। ब्राह्मण को यत्न पूर्वक व्रत का सम्पूर्ण विधान बतलाकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले सत्यनारायण भगवान् वहीं अन्तर्धान हो गये। जिस व्रत को वृद्ध ब्राह्मण ने बतलाया है, उस व्रत को मैं निश्चय ही करूँगा। यह निश्चय कर निर्धन ब्राह्मण को (रात्रौनिद्रा न लब्धवान्) रात्रि में नींद नहीं आयी।।५—८।।

ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम् । करिष्य इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद्विजः।।९।।

तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् । तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्यव्रतमाचरत्।।१०।।

सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसम्पत्समन्वितः । बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः।।११।।

ततःप्रभृति कालं च मासि मासि व्रतं कृतम्।

एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः ।सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान्॥१२॥

तदनन्तर वह ब्राह्मण प्रातःकाल उठा नित्यक्रिया से निवृत्त हो श्रीसत्यनारायणजी के व्रत का निश्चय कर भिक्षा के लिये चल पड़ा। भगवत्-कृपा से उस दिन उसको भिक्षा में बहुत सा धन मिला जिससे बन्धु बान्धवों के साथ उसने सत्यनारायण व्रत किया। इस प्रकार सत्यनारायण की महिमा से ब्राह्मण सब दुःखों से छूटकर अनेक प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त हो गया। उस दिन से लेकर प्रत्येक महीने उसने व्रत किया। इस प्रकार भगवान् सत्यनारायण के इस व्रत को करके वह श्रेष्ठ ब्राह्मण सभी पापों से मुक्त हो दुर्लभ मोक्षपद को प्राप्त किया॥९-१२॥

व्रतमस्य यदा विप्र पृथिव्यां संकरिष्यति। तदैव सर्वदुःखं तु मनुजस्य विनश्यति॥१३॥

एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने। मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत् कथयामि वः॥१४॥

हे विप्र! पृथिवी पर जो मनुष्य 'श्री सत्यनारायण व्रतकथा' करता है, वह सब पापों से छूटकर दुर्लभ मोक्ष का अधिकारी बनता है। आगे जो पृथ्वी पर 'सत्यनारायण व्रत कथा' करेगा वह मनुष्य सब दुःखों से छूट जायेगा। हे ब्राह्मणो! इस तरह नारायणजी के श्रीमुख से कहा हुआ यह व्रत मैंने तुमसे कहा—हे ऋषियो! और क्या सुनना चाहते हो?॥१३—१४॥

ऋषय ऊचुः

तस्माद् विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने ।तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते॥१५॥

ऋषियों ने कहा–हे मुनीश्वर! पृथ्वी में उस ब्राह्मण से सुनकर किस-किस ने इस व्रत को किया? हम वह सब सुनना चाहते हैं। सत्यनारायणव्रत पर हमारी श्रद्धा हो रही है॥१५॥

सूत उवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि । एकदा स द्विजवरो यथाविभव विस्तरैः॥१६॥
बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः। एतस्मिन्नन्तरे काले काष्ठक्रेता समागमत्॥१७॥
बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ। तृष्णया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं कृतं व्रतम्॥१८॥
प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया । कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद् वद मे प्रभो॥१९॥

श्रीसूतजी बोले–हे मुनियो! पृथिवी में जिस-जिसने इस व्रत को किया है वह सब सुनो–एक समय वह ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार बन्धु-बान्धवों के साथ व्रत करने को तैयार हुआ। उसी समय एक लकड़हारा आया, और बाहर लकड़ियों का गट्ठर रखकर ब्राह्मण के घर में गया। प्यास से दुःखी लकड़हारे ने ब्राह्मण को व्रत करते देख ब्राह्मण को नमस्कार कर कहने लगा–कि हे प्रभो! आप यह क्या कर रहे हैं, और इसके करने से क्या फल मिलता है? कृपा कर विस्तार पूर्वक मुझसे कहें॥१६–१९॥

विप्र उवाच

सत्यनारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्। तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत्॥२०॥
तस्मादेतद् व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः। पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ॥२१॥
सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिन्तयत्। काष्ठं विक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद् धनम्॥२२॥
तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम्। इति संचिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके॥२३॥

जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः। तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ।।२४।।

ब्राह्मण ने कहा—सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला यह श्रीसत्यनारायण भगवान् का व्रत है। इसी व्रत के प्रभाव से मेरे यहाँ महान् धन-धान्य आदि की वृद्धि हुई है। ब्राह्मण से इस व्रत के बारे में जानकर लकड़हारा बहुत प्रसन्न हुआ चरणामृत और प्रसाद ग्रहण करके वह नगर चला गया। लकड़हारे ने मन में इस प्रकार का संकल्प किया कि आज ग्राम में लकड़ी बेचने से जो धन मुझे मिलेगा, उसी धन से सत्यनारायणदेव का उत्तम व्रत करूँगा। यह मन में विचार कर बूढ़ा लकड़हारा अपने सिर पर लकड़ियाँ रखकर जिस नगर में धनिक लोग रहते थे, ऐसे सुन्दर नगर में गया। फल-स्वरूप बूढ़े लकड़हारे को आज अन्य दिनों की अपेक्षा लकड़ियों का दाम दुगुनी मात्रा में मिला।।२०—२४।।

ततः प्रसन्नहृदयः सुपक्वं कदली फलम्। शर्कराघृतदुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम्।।२५।।
कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ। ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम्।।२६।।
तद् व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत्। इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।।२७।।

तदनन्तर वह बूढ़ा लकड़हारा दाम ले अतिप्रसन्न होकर सत्यनारायण व्रतकथा की सामग्री सवाया मात्रा में लेकर अपने घर गया। तत्पश्चात् उसने अपने बन्धु-बान्धवों एवं ब्राह्मणों को बुलाकर विधि-विधान से भगवान् सत्यनारायण के व्रत को किया। उस व्रत के प्रभाव से बूढ़ा लकड़हारा धन, पुत्र आदि से युक्त हुआ और संसार के समस्त सुखों को भोगकर बैकुण्ठ को गया।।२५—२७।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः ।।

।। इस प्रकार श्रीस्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्रीसत्यनारायण व्रतकथा का यह दूसरा अध्याय पूरा हुआ ।।२।।

अथतृतीयोऽध्यायः

राजा उल्कामुख, साधु वणिक् एवं लीलावती-कलावती की कथा

सूत उवाच

पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनि सत्तमाः। पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः॥१॥
जितेन्द्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति। दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान् संतोषयत् सुधीः॥२॥
भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती। भद्रशीलानदी तीरे सत्यस्यव्रतमाचरत्॥३॥
एतस्मिन्नन्तरे तत्र साधुरेकः समागतः। वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः॥४॥
नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति। दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं पप्रच्छ विनयान्वितः॥५॥

श्रीसूतजी बोले—हे श्रेष्ठ मुनियों! अब ध्यान पूर्वक आगे की कथा सुनो। प्राचीन समय में उल्कामुख नाम का एक सुबुद्धिमान राजा था। उल्कामुख सत्यवक्ता एवं जितेन्द्रिय था। वह विद्वान् राजा प्रतिदिन देवस्थानों में जाता तथा ब्राह्मणों को धन देकर उन्हें सन्तुष्ट करता था। उसकी धर्मपत्नी कमल के समान मुख वाली और सती-साध्वी एवं शील आदि विनय गुणों से सम्पन्न तथा पतिपरायणा थी। एक दिन भद्रशीला नदी के तट पर दोनों दम्पतियों ने भगवान् सत्यदेव का व्रत एवं पूजन कर रहा था। जिस समय राजा अपने परिवार के साथ व्रत एवं पूजन कर रहे थे, उसी समय वहाँ पर एक साधु वैश्य (वणिक्) आया। उसके पास व्यापार के लिये बहुत-सा धन था। भद्रशीला नदी के तटपर अपनी नौका को किनारे

ठहराकर राजा के पास गया और राजा को व्रत करते देख विनयपूर्वक पूछने लगा।।१–५।।

साधुरुवाच

किमिदं कुरुषे राजन् भक्तियुक्तेन चेतसा। प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्।।६।।

साधु ने कहा–हे राजन्! भक्ति युक्तचित्त से यह आप क्या कर रहे हैं? मेरी सुनने की इच्छा है। यह आप मुझे बताने की कृपा करें।।६।।

राजोवाच

पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः। व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्यावाप्ति काम्यया।।७।।

राजा बोला–हे साधू! अपने बान्धवों के साथ पुत्र प्राप्ति के लिये यह महाशक्तिशाली सत्यनारायण भगवान् का पूजन एवं व्रत कर रहा हूँ।।७।।

भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम्। सर्वं कथय मे राजन् करिष्येऽहं तवोदितम्।।८।।
ममापि संततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम्। ततो निवृत्त्य वाणिज्यात् सानन्दो गृहमागतः।।९।।
भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं संतति दायकम्। तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत्।।१०।।
इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः।।

राजा के वचन को सुनकर वह साधु वैश्य आदर के साथ बोला। हे राजन्! मुझसे इस व्रत का सब विधान कहें। अतः आपके कथनानुसार इस व्रत को मैं भी करूँगा क्योंकि मेरे भी कोई संतति नहीं है। राजा से व्रत का विधान सुनकर साधु व्यापार से निवृत्त हो आनन्द के साथ घर गया। साधु ने अपनी स्त्री

से सन्तति देने वाले उस उत्तम व्रत का समाचार सुनाया और कहा जब मेरे सन्तान होगी तब मैं इस व्रत को करूँगा। साधु ने ऐसे वचन अपनी पत्नी लीलावती से कहे।।८–१०१/२।।

एकस्मिन् दिवसे तस्य भार्या लीलावती सती।।११।।

भर्तृयुक्तानन्दचित्ताऽभवद् धर्मपरायणा। गर्भिणी साऽभवत् तस्य भार्या सत्यप्रसादतः।।१२।।

दशमे मासि वै तस्याः कन्यारत्नमजायत। दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी।।१३।।

नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम्। ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः।।१४।।

न करोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पितं व्रतम्।

एक दिन उसकी पत्नी लीलावती आनन्दित हो एवं सांसारिक धर्म में प्रवृत्त होकर सत्यदेव की कृपा से गर्भवती हुई। तथा समय बीतने पर दसवें महीने में उसके यहाँ एक सुन्दर कन्या ने जन्म लिया। वह कन्या दिनों-दिन इस प्रकार बढ़ने लगी जैसे शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा बढ़ रहा हो। इसलिये उस कन्या का नाम कलावती रखा गया। तब लीलावती ने मीठे शब्दों में अपने पति से कहा कि आपने जो संकल्प किया था कि सन्तान होने पर भगवान् सत्यदेव का व्रत करूँगा सो भगवत् कृपा से हमारे यहाँ कन्या ने जन्म लिया है। आप संकल्पानुसार उस व्रत को क्यों नहीं कर रहे हैं?।।११–१४१/२।।

साधुरुवाच

विवाह समये त्वस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये।।१५।।

इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति। ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि।।१६।।

दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह। मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित्॥१७॥
विवाहार्थं च कन्याया वरं श्रेष्ठं विचारय। तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ काञ्चनं नगरं ययौ॥१८॥
तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः। दृष्ट्वा तु सुन्दरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्॥१९॥
ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा। दत्तवान् साधुपुत्राय कन्यां विधिविधानतः॥२०॥

साधु बोला–हे प्रिये! इसके विवाह के समय व्रत कर लूँगा जल्दी क्या है? अपनी पत्नी को भलीभाँति आश्वासन दे वह नगर को गया। इधर कन्या कलावती पितृ गृह में वृद्धि को प्राप्त हो गई। साधु ने जब नगर में सखियों के साथ क्रीडा करती हुई अपनी पुत्री को विवाह योग्य देखा, और तुरन्त ही दूत को बुलाकर कहा–कि पुत्री कलावती के लिये कोई सुयोग्य वणिक् पुत्र खोजकर लाओ। साधु की आज्ञा पाकर दूत काँचननगर पहुँचा और बड़ी खोज एवं देखभाल कर कन्या कलावती के लिये सुयोग्य वणिक पुत्र को ले आया। उस सुयोग्य वणिक् पुत्र को देखकर साधु वैश्य ने अपने भाई बन्धुओं एवं जाति के लोगों के साथ प्रसन्नचित्त होकर अपनी पुत्री कलावती का विवाह उस सुयोग्य वणिक्पुत्र के साथ कर दिया॥१५-२०॥

ततोऽभाग्यवशात् तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम्। विवाहसमये तस्यास्तेन रुष्टो भवत् प्रभुः॥२१॥
ततः कालेन नियतो निजकर्म विशारदः। वाणिज्यार्थं ततः शीघ्रं जामातृ सहितो वणिक्॥२२॥
रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धु समीपतः। वाणिज्यमकरोत् साधुर्जामात्रा श्रीमता सह॥२३॥
तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च। एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः॥२४॥
भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान्। दारुणं कठिनं चास्य महद् दुःखं भविष्यति॥२५॥

लेकिन दुर्भाग्यवश विवाह के समय भी सत्यदेव का व्रत एवं पूजन करना भूल गया। पूर्व में व्रत का संकल्प करने के बाद भी संकल्प पूरा न करने के कारण भगवान् सत्यनारायण कुपित हो गए। अपने कार्य में कुशल साधु (बनिया) अपने दामाद सहित समुद्र के समीप व्यापार करने रत्नसारपुर पहुँचा। और वहाँ चन्द्रकेतु राजा के नगर में दोनों ससुर जमाई व्यापार करने लगे। भ्रष्ट-प्रतिज्ञ देखकर सत्यनारायण भगवान् ने श्राप दे दिया कि इसे दारुण, कठिन और महान् दुःख प्राप्त हो।।२१-२५।।

एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः। तत्रैव चागत श्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ।।२६।।
तत्पश्चाद् धावकान् दूतान् दृष्ट्वा भीतेन चेतसा। धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः।।२७।।
ततो दूताःसमायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक्। दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वाऽऽनीतौ वणिक्सुतौ।।२८।।
हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः। तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो।।२९।।
राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बध्वा तु ता वुभौ। स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः।।३०।।
मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः। अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चन्द्र केतुना।।३१।।

एक दिन भगवान् सत्यनारायण की माया से प्रेरित होकर दो चोर, राजा के धन को चुराकर भागे जा रहे थे। किन्तु पीछे से राजा के दूतों को आता देख वे दोनों चोर घबराकर भागते-भागते धन को वहीं चुपचाप छुपा दिया, जहाँ दोनों ससुर-जमाई ठहरे हुए थे। तब दूतों ने उस साधु वैश्य के पास राजा के धन को रखा देखकर दोनों को बाँधकर ले गये। और प्रसन्नता से दौड़ते हुए राजा के समीप जाकर बोले ये दो चोर हम पकड़कर ले आये हैं आप देखकर आज्ञा दें। राजा की आज्ञा से उनको कठिन कारावास में डाल दिया।

भगवान् सत्यदेव की माया से किसी ने उन दोनों की बात नहीं सुनी और राजा चन्द्रकेतु ने उन दोनों का धन भी ले लिया।।२६-३१।।

तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवाति दु:खिता। चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम्।।३२।।

आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपाशाति दु:खिता। अन्नचिन्तापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे।।३३।।

कलावती तु कन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम्।

एकस्मिन् दिवसे याता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम्। गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च।।३४

उपविश्य कथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि। प्रसाद भक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति।।३५।।

सत्यदेव के कुपित होने से इधर साधु वैश्य की पत्नी और पुत्री कलावती भी बहुत दु:खी हुई। और घर पर जो धन रखा था चोर चुरा कर ले गये। वह लीलावती शारीरिक तथा मानसिक पीडाओं से युक्त भूख और प्यास से दुखी हो अन्न की चिन्ता से दर-दर भटकने लगी। कन्या कलावती भी भोजन के लिये इधर-उधर प्रतिदिन घूमने लगी। एक दिन भूख प्यास से अति दुखित हो अन्न की चिन्ता में कलावती एक ब्राह्मण के घर गई। वहाँ उसने सत्यनारायण व्रत को होते हुए देखा। वहाँ बैठकर उसने कथा सुनी और वरदान माँगा तदनन्तर प्रसाद ग्रहण करके वह कुछ रात होने पर घर गई।।३२-३५।।

माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः। पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते।।३६।।

कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम्। द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वाञ्छितसिद्धिदम्।।३७।।

तच्छ्रुत्वा कन्यका वाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता। सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च।।३८।।

व्रतं चक्रे सैव साध्वी बन्धुभिः स्वजनैः सह। भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम्॥३९॥
अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षन्तुमर्हसि। व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः॥४०॥
दर्शयामास स्वप्नं हि चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्। वन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम॥४१॥
देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत् त्वयाऽधुना। नो चेत् त्वां नाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम्॥४२॥

माता लीलावती ने कलावती से कहा—हे पुत्री! दिन में कहाँ रही? तथा इतनी रात तक कहाँ रुक गई थी, और तेरे मन में क्या है। कलावती बोली हे माता! मैंने एक ब्राह्मण के घर मनोरथ प्रदान करने वाला सत्यनारायण का व्रत देखा है। पुत्री के वचन सुनकर लीलावती भगवान् के पूजन की तैयारी करने लगी लीलावती ने परिवार और बन्धुओं सहित भगवान् का पूजन एवं व्रत किया और यह वर माँगा कि मेरे पति और दामाद शीघ्र ही सकुशल लौट आएँ। और प्रार्थना की हम सबका अपराध क्षमा करें। भगवान् सत्यदेव इस व्रत से सन्तुष्ट हुए और राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दिखाई दिये और बोले—हे राजन्! दोनों बन्दी वैश्य प्रातःकाल ही छोड़ दो और उनका सब धन जो तुमने ग्रहण किया है वह लौटा दो, नहीं तो तुम्हारा सब धन, राज्यपाट आदि सब नष्ट कर दूँगा।३६-४२॥

एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्योऽभवत् प्रभुः। ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह॥४३॥
उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति। बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ॥४४॥
इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ। समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः॥४५॥
आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबन्धनात्। ततो महाजनौ नत्वा चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्॥४६॥

स्मरन्तौ पूर्व वृत्तान्तं नोचतुर्भयविह्वलौ। राजा वणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम्।।४७।।

राजा से स्वप्न में इतना कहकर भगवान् सत्यनारायण अन्तर्धान हो गये। इसके अनन्तर प्रातःकाल राजा चन्द्रकेतु ने सभा में अपने सभासदों को स्वप्न के विषय में बताया और दोनों बन्दी वैश्यों को मुक्त कर सभा में लाने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञा पाकर राजपुरुष दोनों महाजनों को बन्धन से मुक्त कर राजा के सामने लाकर विनय पूर्वक बोले–हे महाराज! बेड़ी–बन्धन से मुक्त करके दोनो वणिक्पुत्र लाये गये हैं। इसके पश्चात् आते ही दोनों महाजनों ने राजा चन्द्रकेतु को नमस्कार किया और पूर्व वृत्तान्त का स्मरण करते हुए भय से विह्वल हो गये और कुछ बोल न सके। राजा चन्द्रकेतु ने वणिक्पुत्रों को देखकर मीठे वचनों सेआदर पूर्वक कहा–।।४३–४७।।

दैवात् प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्। तदा निगडसंत्यागं क्षौरकर्माद्यकारयत्।।४८।।

वस्त्रालङ्कारकं दत्त्वा परितोष्य नृपश्च तौ। पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसाऽतोषयद् भृशम्।।४९।।

पुरानीतं तु यद् द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्। प्रोवाच च ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम्।।५०।।

राजानं प्रणिपत्याह गन्तव्यं त्वत्प्रसादतः। इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति।।५१।।

हे महानुभवों! आप लोगों को भावी वस ऐसा कठिन दुःख प्राप्त हुआ है। अब कोई भय नहीं है। ऐसा कहकर उन दोनों की बेणी खुलवाकर क्षौर कर्म कराया और नए–नए वस्त्राभूषण देकर तथा आदर के साथ सामने बुलाकर वाणी द्वारा अत्यधिक आनन्दित किया। उनका जितना धन लिया था उससे दूना करके

दे दिया, राजा ने पुनः उनसे कहा—'साधो! अब आप अपने घर को जायँ। राजा को प्रणाम करके वैश्य साधु ने कहा–'आपकी कृपा से हम जा रहे हैं'—ऐसा कहकर और भगवान् का धन्यवाद कर दोनों महावैश्यों ने अपने घर के लिये प्रस्थान किया।।४८–५१।।

जापर कृपा राम की होई। तापर कृपा करहिं सब कोई।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः ।।

।। इस प्रकार श्रीस्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्रीसत्यनारायण व्रतकथा का यह तीसरा अध्याय पूरा हुआ ।।३।।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

असत्य-भाषण तथा भगवान् के प्रसाद की अवहेलना का परिणाम

सूत उवाच

यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायनपूर्विकाम्। ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ॥१॥
कियद् दूरे गते साधौ सत्यनारायणःप्रभुः। जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम्॥२॥
ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै। कथं पृच्छसि भो दण्डिन् मुद्रां नेतुं किमिच्छसि॥३॥
लतापत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम। निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः॥४॥
एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः। कियद् दूरे ततो गत्वा स्थितः सिन्धु समीपतः॥५॥

श्रीसूतजी बोले—वैश्य ने मंगलाचार और ब्राह्मणों को धन देकर अपने नगर की यात्रा आरंभ की, और उनके थोड़ी दूर पहुँचने पर भगवान् सत्यनारायण की साधू के सत्यता की परीक्षा लेने की जिज्ञासा हुई, दण्डी का वेश धारण कर सत्यनारायण भगवान ने उनसे पूछा—हे साधो! आपकी नाव में क्या भरा है? अभिमानी वणिक हँसता हुआ अवहेलना पूर्वक बोला—हे दण्डिन्! आप क्यों पूछते हैं? क्या कुछ द्रव्य लेने की इच्छा है? मेरी नाव में तो बेल तथा पत्ते आदि भरे हैं। वैश्य की ऐसी निष्ठुर वाणी सुनकर भगवान् ने कहा तुम्हारा वचन सत्य हो। ऐसा कहकर दण्डी सन्यासी का रूप धारण किये हुए सत्यनारायण भगवान् वहाँ से चले गये और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे बैठ गये॥१-५॥

गते दण्डिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा। उत्थितां तरणीं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ॥६॥
दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितो न्यपतद् भुवि। लब्धसंज्ञो वणिक्पुत्रस्ततश्चिन्तान्वितोऽभवत्॥७॥
तदा तु दुहितुः कान्तो वचनं चेदमब्रवीत्। किमर्थं क्रियते शोकः शापो दत्तश्च दण्डिना॥८॥
शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः। अतस्तच्छरणं यामो वाञ्छतार्थो भविष्यति॥९॥
जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा। दृष्ट्वा च दण्डिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम्॥१०॥
क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ। एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत्॥११॥

दण्डी के चले जाने पर वैश्य ने नित्यक्रिया करने के पश्चात् नाव को जल में ऊपर की ओर उठी हुई देखकर अत्यन्त आश्चर्य में पड़ गया, तथा नाव में बेल आदि देखकर मूर्छित हो जमीन पर गिर पड़ा। फिर मूर्छा खुलने पर बहुत शोक करने लगा तब उसके दामाद ने इस प्रकार कहा–आप शोक न करें यह दण्डी का श्राप है, अतः उनकी शरण में चलना चाहिए तभी हमारी मनोकामना पूरी होगी क्योंकि वे चाहें तो सब कुछ कर सकते हैं इसमें कोई संशय नहीं है। दामाद के वचन सुनकर वह साधु वणिक् दण्डी-स्वामीजी के पास पहुँचा। अत्यन्त भक्तिभाव से प्रणाम करके बोला–मैंने जो आपसे असत्य वचन कहे थे, उसके लिए क्षमा कीजिए ऐसा कहकर महान् शोकातुर हो रोने लगा॥६-११॥

प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च। मा रोदीः शृणुमद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः॥१२॥
ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः। तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं स्तुतिं कर्तुं समुद्यतः॥१३॥

तब दण्डी भगवान् बोले–हे मूर्ख! रो मत, मेरी बात सुनो। मेरी पूजा से उदासीन होने के कारण तथा

मेरी आज्ञा से बार-बार तुम्हें दुःख प्राप्त हुआ है। भगवान् की ऐसी वाणी सुनकर साधू वणिक् उनकी स्तुति करने लगा-।।१२-१३।।

साधुरुवाच

त्वन्मायामोहिताःसर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः। न जानन्ति गुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो।।१४।।

मूढोऽहं त्वां कथं जाने मोहितस्तवमायया। प्रसीद पूजयिष्यामि यथाविभवविस्तरैः।।१५।।

पुरा वित्तं च तत् सर्वं त्राहि मां शरणागतम्। श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः।।१६।।

साधु ने कहा—हे भगवान्! यह आश्चर्य की बात है कि आपकी माया से मोहित होने के कारण ब्रह्मा आदि देवता भी आपके रूप और गुणों को ठीक रूप से नहीं जान पाते, फिर मैं अज्ञानी आपकी माया से मोहित होने के कारण कैसे जान सकता हूँ? आप प्रसन्न होइए मैं सामर्थ्य के अनुसार आपकी पूजा करूँगा। मैं आपकी शरण में आया हूँ मेरा जो नौका में स्थित पुराना धन था, उसकी तथा मेरी रक्षा करें, और पहले की तरह मेरा सामान नौका में भर जाय। उसके भक्तियुक्त वचन सुनकर भगवान् जनार्दन सन्तुष्ट हो गये।।१४-१६।।

वरं च वाञ्छितं दत्त्वा तत्रैवान्तर्दधे हरिः। ततो नवं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम् ।।१७।।

कृपया सत्यदेवस्य सफलं वाञ्छितं मम। इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि ।।१८।।

हर्षेण चाभवत् पूर्णःसत्यदेवप्रसादतः। नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशगमनं कृतम् ।।१९।।

साधुर्जामातरं प्राह पश्य रन्तपुरीं मम। दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम् ।।२०।।

भगवान् हरि उसकी इच्छानुसार वर देकर अन्तर्धान हो गये। तब उन्होंने नाव पर आकर देखा कि नाव धन से परिपूर्ण है, तब भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और वह स्वजनों के साथ भगवान् सत्यदेव का पूजन किया, और नाव को यत्न पूर्वक सभाँलकर साथियों सहित अपने नगर को चला। साधु वणिक् ने अपने दामाद से कहा–'वह देखो मेरी रत्नपुरी नगरी दिखाई दे रही है'। इसके बाद उसने अपने धन के रक्षक दूतों को अपने आगमन का समाचार देने के लिये अपनी नगरी में भेजा।।१७–२०।।

ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च। प्रोवाच वाञ्छितं वाक्यं नत्वा बद्धाञ्जलिस्तदा।।२१।।
निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक्। आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः ।।२२।।
श्रुत्वा दूतमुखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती। सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति ।।२३।।
व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्शनाय च। इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च ।।२४।।
प्रसादं च परित्यज्य गता साऽपि पतिं प्रति। तेन रुष्टाः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा।।२५।।
संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत्।

तत्पश्चात् उस दूत ने नगर में जाकर साधू की भार्या को देख हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और उसके अभीष्ट की बात कही कि साधू अपने दामाद सहित बहुत सा धन लेकर इस नगर के समीप आ गये हैं। ऐसा वचन सुन लीलावती ने बड़े हर्ष के साथ सत्यदेव का पूजन कर पुत्री से कहा मैं अपने पति के दर्शन करने जाती हूँ, तुम कार्य पूर्ण करके शीघ्र आना, माता का ऐसा वचन सुनकर कलावती व्रत को समाप्त करके प्रसाद छोड़ पति के दर्शन के लिये चली गई। प्रसाद की अवज्ञा के कारण सत्यदेव

ने रुष्ट हो उनके पति को नाव सहित पानी में डुबो दिया।।२१-२५१/२।।

ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम् ।।२६।।

शोकेन महता तत्र रुदन्ती चापतद् भुवि। दृष्ट्वा तथाविधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम् ।।२७।।

भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत्। चिन्त्यामानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः ।।२८।।

ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाऽभवत्। विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत् ।।२९।।

इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः। न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता ।।३०।।

सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते। इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैः सह ।।३१।।

ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोद ह।

तत्पश्चात् कलावती अपने पति को न देखकर रोती हुई, महान् शोकातुर होकर जमीन पर गिर गई इस तरह नौका को डूबा हुआ तथा कन्या को रोता देख साधू दुखित हो मन में विचार करने लगा—यह क्या आश्चर्य हो गया? नाव का संचालन करने वाले भी चिन्तित हो गये। लीलावती भी कन्या को व्याकुल देखकर विह्वल हो गयी और अत्यन्त दुःख से विलाप करती हुई अपने पति से इस प्रकार कहने लगी—'अभी-अभी नौका के साथ दामाद कैसे अलक्षित हो गया, न जाने किस देवता की उपेक्षा से नौका हरण कर ली गयी अथवा श्रीसत्यनारायण की महिमा कौन जान सकता है!' ऐसा कहकर स्वजनो के साथ विलाप करने लगी और कन्या कलावती को गोद में लेकर रोने लगी।।२६-३११/२।।

ततःकलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता।।३२।।

गृहीत्वा पादुके तस्यानुगन्तुं च मनोदधे। कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक्॥३३॥
अतिशोकेन संतप्तश्चिन्तयामास धर्मवित्। हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया॥३४॥
सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः। इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम् ॥३५॥
नत्वा च दण्डवद् भूमौ सत्यदेवं पुनः पुनः। ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः ॥३६॥
जगाद वचनं चैनं कृपया भक्तवत्सलः। त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता ॥३७॥
अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम्। गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयाति चेत्पुनः॥३८॥
लब्धभर्त्री सुता साधो भविष्यति न संशयः।

कलावती कन्या भी अपने पति के नष्ट हो जाने पर दुःखी हो गयी और अपने पति की पादुका लेकर उनका अनुगमन करने के लिये उसने मन में निश्चय किया। कन्या के इस प्रकार के आचरण को देखकर पत्नी सहित वह साधु वणिक् बहुत दुःखी हुआ और विचार करने लगा—या तो भगवान् सत्यदेव ने दामाद के साथ धन-धान्य से भरी इस नौका का अपहरण किया है अथवा हम सभी उनकी माया से मोहित हो गये हैं। हे प्रभु! अपनी धन-शक्ति के अनुसार मैं आपकी पूजा करूँगा'—सभी के सामने साधु ने अपने मन की इच्छा प्रकट की और बारम्बार भगवान् सत्यदेव को दण्डवत् प्रणाम किया, एवं प्रार्थना की कि हे प्रभो! मुझसे या मेरे परिवार से जो भूल हुई उसे क्षमा करो। उसके दीन वचन सुनकर भगवान् दीनानाथ को दया आ गई और आकाशवाणी के द्वारा कृपापूर्वक बोले—हे साधू तेरी कन्या ने मेरे प्रसाद को छोड़कर अपने पति को देखने चली आयीं है, निश्चय ही यही कारण है कि उसका पति दिखाई नहीं दे रहा है।

यदि घर जाकर प्रसाद ग्रहण कर आये तो तुम्हारी पुत्री निश्चितरूप से पति को प्राप्त करेगी, इसमें संशय नहीं है।।३२-३८१/२।।

कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात् ।।३९।।
क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा। पश्चात् सा पुनरागत्य ददर्श स्वजनं पतिम्।।४०।।
ततः कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति। इदानीं च गृहं याहि विलम्बं कुरुषे कथम्।।४१।।
तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽभूद् वणिक्सुतः। पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः।।४२।।
धनैर्बन्धुगणैः सार्धं जगाम निजमन्दिरम्। पौर्णमास्यां च संक्रान्तौ कृतवान् सत्यस्य पूजनम्।।४३।।
इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ ।।४४।।

आकशवाणी को सुन कलावती ने शीघ्र घर पहुँचकर प्रसाद ग्रहण किया और पुनः उसने आकर अपने पति का दर्शन पाया। तब वैश्य परिवार के सब लोग प्रसन्न हुए। कलावती कन्या ने अपने पिता से कहा–'अब विलम्ब क्यों कर रहे हैं? अब तो घर चलें। कन्या की बात सुनकर वणिक्पुत्र सन्तुष्ट हो गया और साधू ने बन्धु-बांधवों सहित सत्यदेव का विधिपूर्वक पूजन किया, और धन तथा बन्धु बान्धवों के साथ अपने घर को गया। उस दिन से हर पूर्णिमा व संक्रान्ति एवं विशेष पर्वों में सत्यनारायण भगवान् का पूजन करते हुए इस लोक में सुख भोगकर वैकुण्ठ में चला गया।।३९-४४।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः ।।

।। इस प्रकार श्री स्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्रीसत्यनारायण व्रतकथा का यह चौथा अध्याय पूरा हुआ ।।४।।

अथ पञ्चमोऽध्याय:

राजा तुङ्गध्वज और गोपगणो की कथा

सूत उवाच

अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमा:। आसीत् तुङ्गध्जो राजा प्रजापालनतत्पर: ॥१॥
प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दु:खमवाप स:। एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान् पशून् ॥२॥
आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्। गोपा: कुर्वन्ति संतुष्टा भक्तियुक्ता: स बान्धवा: ॥३॥
राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गतो न ननाम स:। ततो गोपगणा: सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ ॥४॥
संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम्। तत: प्रसादं संत्यज्य राजा दु:खमवाप स: ॥५॥

श्रीसूतजी बोले–हे श्रेष्ठ मुनियों! अब इसके बाद मैं दूसरी कथा कहूँगा, आप लोग सुनें। अपनी प्रजा का पालन करने में लीन तुंगध्वज नामक एक राजा था। उसने भी भगवान् सत्यदेव के प्रसाद को त्यागकर बहुत दु:ख पाया। एक बार वह वन में जाकर और वहाँ बहुत से पशुओं को मारकर बड़ के पेड़ के नीचे आया। वहाँ उसने भक्ति–भाव से ग्वालों को बन्धु–बांधवों सहित सन्तुष्ट–चित्त होकर सत्यदेव की पूजा करते देख, राजा अभिमान वश न वहाँ गया और न ही उसने भगवान् सत्यनारायण को नमस्कार किया। जब ग्वालों ने भगवान् का प्रसाद उसके सामने रखा तो वह प्रसाद को त्यागकर अपनी सुन्दर नगरी की ओर चला गया। ग्वालवालों ने भगवान् का इच्छानुसार प्रसाद ग्रहण किया। इधर राजा को प्रसाद का परित्याग करने से बहुत दु:ख प्राप्त हुआ॥१–५॥

तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत्। सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम् ।।६।।
अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम्। मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ ।।७।।
ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैःसह । भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकार विधिना नृपः ।।८।।
सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत्। इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ ।।९।।

जब अपने राजमहल में आया तो क्या देखता है? उसने अपना सब कुछ नष्ट पाया, सम्पूर्ण धन-धान्य एवं सभी सौ पुत्र नष्ट हो गये। राजा ने मन में यह निश्चय किया कि अवश्य ही भगवान् सत्यनारायण ने हमारा नाश किया है, इसलिये मुझे वहीं जाना चाहिये जहाँ श्री सत्यनारायणजी का पूजन हो रहा था। तत्पश्चात् वह राजा मन में विश्वास कर ग्वाल वालों के समीप गया। और उसने गोप गणों के साथ भक्ति-श्रद्धा से युक्त होकर विधिपूर्वक भगवान् सत्यनारायण का पूजन किया एवं प्रसाद ग्रहण किया। भगवान् सत्यदेव की कृपा से राजा पुनः धन और पुत्रों से सम्पन्न हो गया। इस लोक में सभी सुखों का उपभोगकर अन्त में वैकुण्ठलोक को प्राप्त हुआ।।६-९।।

य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्लभम्। शृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम् ।।१०।।
धनधान्यादिकं तस्य भवेत् सत्यप्रसादतः। दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।।११।।
भीतो भयात् प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः। ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरंव्रजेत् ।।१२।।
इति वः कथितं विप्राः सत्यनारायणव्रतम्। यत् कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः।।१३।।

श्रीसूतजी कहते हैं-कि इस परम दुर्लभ व्रत को जो व्यक्ति करता है और पुण्यमयी एवं फलप्रदायिनी

भगवान् की कथा को भक्ति-युक्त होकर सुनता है, उसे भगवान् सत्यदेव की कृपा से धन-धान्य की प्राप्ति होती है। निर्धन-धनी होता है, बन्दी-बन्धन से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है, डरा हुआ व्यक्ति भय से मुक्त हो जाता है, सन्तान हीनों को संतान प्राप्त होती है यह सत्य बात है इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। भगवान् की कृपा से उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं एवं सभी मनोरथों को प्राप्तकर अन्त में बैकुण्ठधाम को प्राप्त करता है। हे ब्राह्मणों! इस प्रकार मैंने आप लोगों से भगवान् सत्यनारायण के व्रत को कहा, जिसे करके मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है।।१०-१३।।

विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा। केचित् कालं वदिष्यन्ति सत्यमीशं तमेव च ।।१४।।
सत्यनारायणं केचित् सत्यदेवं तथापरे। नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदम्।।१५।।
भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातनः। श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम्।।१६।।
य इदं पठते नित्यं श्रृणोति मुनिसत्तमाः। तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः।।१७।।
व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च। तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः।।१८।।

हे ऋषियो! कलियुग में तो भगवान् सत्यदेव की पूजा विशेष फलदायिनी है। भगवान् विष्णु को ही कुछ लोग काल, कुछ लोग सत्य, कोई ईश और कोई सत्यदेव तथा दूसरे लोग सत्यनारायण नाम से पुकारेंगे। अनेक रूप धारण करके भगवान् सत्यनारायण सभी का मनोरथ सिद्ध करते हैं। कलियुग में सनातन भगवान् विष्णु ही सत्यव्रत-रूप धारण करके सभी का मनोरथ पूर्ण करने वाले होंगे। हे श्रेष्ठ मुनियों! जो व्यक्ति प्रतिदिन भगवान् सत्यनारायण की इस व्रतकथा को पढ़ता है, सुनता है, भगवान्

सत्यनारायण की कृपा से उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। हे मुनीश्वरो! पूर्वकाल में जिन्होंने इस व्रत को किया था उनके अगले जन्म की कथा कहता हूँ; आप लोग सुनें।।१४–१८।।

शतानन्दोमहाप्राज्ञःसुदामाब्राह्मणो ह्यभूत्। तस्मिञ्जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह।।१९।।
काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह। तस्मिञ्जन्मनि श्रीरामं सेव्य मोक्षं जगाम वै ।।२०।।
उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथोऽभवत्। श्रीरङ्गनाथं सम्पूज्य श्रीवैकुण्ठं तदागमत् ।।२१।।
धार्मिकः सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत्। देहार्धं क्रकचैश्छित्त्वा दत्त्वा मोक्षमवाप ह ।।२२।।
तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायम्भुवोऽभवत् किल। सर्वान् भागवतान् कृत्वा श्रीवैकुण्ठं तदाऽगतम्।।२३।।
भूत्वा गोपाश्च ते सर्वे व्रजमण्डलवासिनः। निहत्य राक्षसान् सर्वान् गोलोकं तु तदा ययुः ।।२४।।

महान् प्रज्ञासम्पन्न शतानन्द नामके ब्राह्मण सत्यनारायण के व्रत के प्रभाव से दूसरे जन्म में सुदामा नामक ब्राह्मण हुए, और उस जन्म में भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करके उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। लकड़हारा भिल्ल गुहों का राजा हुआ और अगले जन्म में उसने श्रीराम की सेवा करके मोक्ष प्राप्त किया। महाराज उल्कामुख दूसरे जन्म में राजा दशरथ हुए, जिन्होंने श्रीरङ्गनाथ की सेवा पूजा करके अन्त में वैकुण्ठ धाम प्राप्त किया। इसी प्रकार धार्मिक और सत्यव्रती साधु पिछले जन्म के सत्यव्रत के प्रभाव से दूसरे जन्म में मोरध्वज नाम का राजा हुआ। उसने आरे से चीरकर अपने पुत्र की आधी देह भगवान् श्रीकृष्ण को अर्पित कर मोक्ष प्राप्त किया। महाराज तुङ्गध्वज जन्मान्तर में स्वायम्भुव मनु हुए और भगवत् सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्यों का भक्ति पूर्वक अनुष्ठान करके वैकुण्ठ लोक को प्राप्त हुए। जो गोपगण थे, वे सब जन्मान्तर

में व्रजमण्डल में निवास करनेवाले गोप एवं ग्वालवाल हुए और श्रीकृष्ण की सन्निधि पाकर एवं राक्षसों का संहार करके उन्होंने भी भगवान् का शाश्वतधाम—गोलोकधाम प्राप्त किया।।१९—२४।।

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ इस प्रकार श्रीस्कन्द पुराण के अन्तर्गत रेवाखण्ड में श्रीसत्यनारायण व्रतकथा का यह पाँचवा अध्याय पूरा हुआ ॥५।

हवन प्रकरण

भगवान् की कथा सुनने के बाद हवन करने की विधि आती है। जो लोग हवन करना चाहें, उनके लिये यहाँ संक्षेप में हवन की विधि दी जा रही है। कथा स्थल में ही मिट्टी से चौकोर वेदी बना लेनी चाहिये। हवन से पूर्व हाथ में जल अक्षत आदि लेकर इस प्रकार सङ्कल्प करना चाहिये

ॐविष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐपूर्वोच्चारित ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभवेलायां शुभपुण्य तिथौ ....गोत्रोत्पन्नोऽहं .... नामोऽहं (वर्मोऽहं, गुप्तोऽहं) शर्मा यजमानोऽहं (सपत्नीकोऽहं) कृतस्य श्रीसत्यनारायण व्रतकथा कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं यथोपस्थित सामग्रीभिः होमं करिष्ये। संकल्प कर जल छोड़ दें।

प भूसंस्कार

संकल्प के उपरान्त वेदी के निम्न लिखित पाँच संस्कार करने चाहिये

(१) **(दर्भैः परिसमूह्य)** तीन कुशों से वेदी अथवा ताम्रकुण्ड का दक्षिण से उत्तर की ओर परिमार्जन करें तथा उन कुशाओं को ईशान दिशा में फेंक दें। (२) **(गोमयोदकेनोपलिप्य)** गोबर और जल से लीप दें। (३) **(स्रुवमूलेन अथवा कुशमूलेन त्रिरुल्लिख्य)** स्रुवा अथवा कुशमूल से पश्चिम में पूर्व की ओर प्रादेश मात्र (दस अंगुल लम्बी) तीन रेखाएँ दक्षिण से प्रारम्भ कर उत्तर की ओर खींचें। (४) **(अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य)** उल्लेखन क्रम से दक्षिण अनामिका और अँगूठे से रेखाओं पर से मिट्टी निकालकर बायें हाँथ में तीन बार रखकर पुनः सब मिट्टी दाहिने हाथ में रख लें और उसे उत्तर की ओर फेंक दें। (५) **(उदकेनाभ्युक्ष्य)** पुनः जल से कुण्ड या स्थण्डिल को सींच दें।

इस प्रकार पञ्च-भू-संस्कार करके पवित्र अग्नि अपने दक्षिण की ओर रखें और उस अग्नि से थोड़ा सा क्रव्याद अंश निकाल कर नैर्ऋत्य कोण में रख दें। पुनः सामने रखी पवित्र अग्नि को कुण्ड या स्थण्डिल पर निम्नलिखित मन्त्र से

स्थापित कर दें।

ॐअग्निन्दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ२ आसादयादिह ॥

इस मन्त्र से अग्नि स्थापन करने के पश्चात् कुशों से परिस्तरण (फैला दें) करें। कुण्ड या स्थण्डिल के पूर्व उत्तराग्र तीन कुशा या दूर्वा रखें। दक्षिणभाग में पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखें। पश्चिमभाग में उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखें। उत्तरभाग में पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखें। अग्नि को बाँस की नली से प्रज्वलित करें। इसके बाद हाथ में पुष्प लेकर निम्न-मन्त्र से अग्निदेव का आवाहन करें

ॐसर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
विश्वरूपो महान् अग्निः प्रणीतः सर्व कर्मसु ॥

ॐ भूर्भूवः स्वः अग्नये नमः आवाहयामि स्थापयामि।

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि का ध्यान एवं गन्ध, अक्षत आदि से पूजन करें

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम् ॥

ॐभूर्भूवःस्वः बलवर्धननाम् अग्नये नमः ध्यायामि ध्यानं समर्पयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।।

हवन विधि

दाहिना घुटना पृथ्वी पर लगाकर स्रुवा से लेकर प्रजापति देवता का ध्यान करके निम्न-मन्त्र का मन से उच्चारण कर प्रज्वलित अग्नि में आहुति दें, आहुति देने के पश्चात् स्रुवा में बचे घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ें।

(१) ॐप्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। (२) ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम।

(३) ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम। **(४) ॐस्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।**

यहाँ से प्रोक्षणी में घी छोड़ना बन्द कर दें।

श्रेष्ठ आहुति (आहुती म गी मुद्रा से देनी चाहिये एवं स्वाहा इस ाब्द के उच्चारण के साथ देनी चाहिये)

ॐगणानान्त्वा गणपतिॐ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिॐ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिॐ हवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा॥

ॐअम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमा नयति कश्चन। स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

नवग्रह होम

(१) ॐ सूर्याय स्वाहा। (२) ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। (३) ॐ भौमाय स्वाहा।
(४) ॐ बुधाय स्वाहा। (५) ॐगुरवे स्वाहा। (६) ॐ शुक्राय स्वाहा।
(७) ॐ शनैश्चराय स्वाहा। (८) ॐ राहवे स्वाहा। (९)ॐ केतवे स्वाहा।

ॐअधिदेवताभ्यो स्वाहा। ॐप्रत्यधि देवताभ्यो स्वाहा। ॐपञ्चलोकपालेभ्यो स्वाहा।

षोडशमात का हवन

(१) ॐ गौर्यै स्वाहा। (२) ॐपद्मायै स्वाहा। (३) शच्यै स्वाहा। (४) मेधायै स्वाहा। (५) ॐसावित्र्यै स्वाहा। (६) विजयायै स्वाहा। (७) ॐ जयायै स्वाहा। (८) देवसेनायै स्वाहा। (९) ॐ स्वधायै स्वाहा। (१०) ॐ स्वाहायै स्वाहा। (११) ॐ मातृभ्यो स्वाहा। (१२) ॐ लोकमातृभ्यो स्वाहा। (१३) ॐ धृत्यै स्वाहा। (१४) ॐ पुष्टयै स्वाहा। (१५) ॐ तुष्टयै स्वाहा। (१६) ॐ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा।

सप्तम तमात काहकन

ॐश्रियै स्वाहा। ॐलक्ष्म्यै स्वाहा। ॐधृत्यै स्वाहा। ॐमेधायै स्वाहा। ॐस्वाहायै स्वाहा। ॐप्रज्ञायै स्वाहा। ॐसरस्वत्यै स्वाहा।

प्रधान–होम

यहाँ प्रधान देवता श्रीसत्यनारायण हैं अत: प्रथम द्वादशाक्षर मन्त्र **"ॐनमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा"** का कम से कम १०८ बार (एक माला) आहुति देनी चाहिये, अथवा समय के अनुकूल यथाशक्ति जप करके मन्त्र के साथ अन्त में स्वाहा बोलकर दशांश हवन करना चाहिये। एक माला से आहुति न हो सके तो कम से कम दस आहुतियाँ देनी ही चाहिये।

अग्निदेव का उत्तर पूजन

प्रधान हवन के पश्चात् हवन की सफलता की सिद्धि के लिये निम्नलिखित मन्त्र से गन्ध, अक्षत एवं पुष्पादि से उत्तर पूजन करें

ॐस्वाहा-स्वधा-युताय बलवर्धन-नामाग्नये नम:, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना

ॐश्रद्धां मेधां यश: प्रज्ञां विद्यां बुद्धि बलं श्रियम्। आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥
ॐस्वाहास्वधायुताय बलवर्धननामाग्नये नम: प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि प्रणमामि॥

इसके बाद 'ॐ अङ्गानि च मा आप्यायन्ताम्' कहकर हाथों से अग्निदेव को अपने सम्पूर्ण शरीर में धारण करने की भावना करें।

स्विष्टकृत् हवन   स्रुवा में घी रखकर दाहिना घुटना जमीन में लगाकर निम्नमन्त्र से आहुति दें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम। (शेष स्रुवा में बचा घी प्रोक्षणी में डालें)

भूः आदि नव आहुतियाँ

प्रत्येक आहुति के बाद स्रुवा से बचा घी प्रोक्षणी पात्र में डालें।

१. ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम। २. ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम। ३. ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम। ४. ॐ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा, इदं अग्नीवरुणाभ्यां न मम। ५. ॐ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा, इदं अग्नीवरुणाभ्यां न मम। ६. ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

७. ॐ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्‌भ्यः स्वर्केभ्यश्च स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्‌भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

८. ॐ वरुणायादित्यायादितये स्वाहा। इदं वरुणायादित्यादितये न मम।

९. ॐप्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

अग्नि प्रदक्षिणा तथा भस्मधारण

तदुपरान्त यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करे और आचार्य घृतयुक्त स्रुवा से भस्म ग्रहण कर अनामिका अँगुली से पहले स्वयं भस्म धारण करे, तदनन्तर श्रोताओं को भस्म धारण कराएँ। भस्म धारण की विधि इस प्रकार है

'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' कहकर ललाट में, **'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्'** कहकर कण्ठ में, **'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्'** कहकर दक्षिण बाहुमूल में और **'ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्'** कहकर हृदय में भस्म धारण करना चाहिये।

संस्रवप्राशन और दक्षिणादान

प्रोक्षणीपात्र के जल में आहुति से बचा जो घृत छोड़ा गया है, उसको यजमान थोड़ा ग्रहण कर ले अथवा सूँघ ले, इसी का नाम संस्रव प्राशन है। तत् पश्चात् आचमन करें। आचार्य आदि ब्राह्मणों को दक्षिणा तथा भूयसी (भूमि) दक्षिणा प्रदान करें। तदनन्तर भगवान् का उत्तर पूजन करें।

उत्तर पूजन

संक्षेप में गन्धाक्षत पुष्पादि उपचारों से भगवान् श्रीसत्यनारायण तथा आवाहित देवताओं का उत्तर पूजन करना चाहिये। पूजनोपरान्त आरती करनी चाहिये।

ॐभूर्भुवः स्वः सर्वे आवाहित देवताभ्यो नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

श्रीसत्यनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मीरमणा जय श्रीलक्ष्मीरमणा। सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ।। जय...।।
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे। नारद करत निरंजन, घण्टा ध्वनि बाजे ।। जय...।।
प्रकट भये कलि कारण द्विज को दरश दियो। बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कँचन महल कियो ।। जय...।।
दुर्बल भील कठारो जिनपर कृपा करी। चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत्ति हरी ।। जय...।।
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्हीं। सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं।। जय...।।
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रुप धर्‌यो। श्रद्धा धारण कीन्हीं तिनको काज सर्‌यो।। जय...।।
ग्वाल-बाल संग राजा वन में भक्ति करी। मनवाञ्छित फल दीन्हों दीनदयालु हरी ।। जय...।।
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा। धूप, दीप, तुलसी से राजी सत्यदेवा।। जय...।।
श्रीसत्यनारायणजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्दस्वामी मनवाञ्छित फल पावै।। जय..।।

आरार्तिक्यम्

माँगलिक चिह्नों से अलंकृत तथा पुष्प आदि से सुसज्जित थाली में कपूर अथवा घृत की बत्ती को प्रज्वलित कर जल से प्रोक्षित कर लें। पुनः घण्टा नाद करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर भगवान् की मङ्गलमय आरती करें। आरती शास्त्रोक्त नियमों को ध्यान में रखकर करनी चाहिये। शास्त्रोक्त विधान यह है कि सर्वप्रथम चरणों में चार बार, नाभि में दो बार मुख में एक बार आरती करने के बाद पुनः समस्त अङ्गों की सात बार आरती उतारनी चाहिये।

दीपावलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वर। आरार्तिक प्रदानेन मम तेज प्रदो भव॥

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारं। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वे आवाहित देवताभ्यो नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि। जलेन शीतली करणं पुष्पैः देवाभि वन्दनं शरीरे आरोग्यार्थे स्वात्माभिवन्दनं करौ प्रक्षाल्य। (शीतली करण कर हस्त प्रक्षालन करें)

पश्चात् निम्नमन्त्र से शङ्ख का जल भगवान् पर घुमाकर भगवान् को निवेदित करें तथा अपने ऊपर एवं भक्तजनों पर छोड़ें

शङ्खमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि। अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥

मन्त्र पुष्पाञ्जलिः

ॐयज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणि प्प्रथमान्या सन्। तेह नाकम्महि मानः सचन्त यत्र पूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः।

ॐराजाधिराय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाया महाराजाय नमः। ॐस्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्य माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे आवीक्षितस्य कामप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐविश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।। सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीजन यन्देवऽ एकः॥

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

ॐ गणाम्बिकायै च विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

पुष्पाञ्जलिचराचरं व्याप्तमिदं त्वयैव तवैव भासास्ति जगत्सभासम्।
त्वय्येव पुष्पाञ्जलिरर्पितेयं मोदाय लोकस्य तवापि चास्तु।।

नानासुगन्धि पुष्पाणि ऋतु कालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर॥

सुमन सुगन्धित सुमन ले सुमन सुभक्ति सुधार। पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ देव करो स्वीकार॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वे आवाहित देवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

प्रदक्षिणाम्

ॐये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाꣳ सहस्रयोजने वध वा नित मसि ॥

त्वद्देहसंस्थानि जगन्तिदेव त्वद्रोमकूपेषु च देवसङ्घाः।
प्रदक्षिणा दक्षधिपोऽत एव कुर्वन्ति पापौघविनाशनाय।।

स्तुति प्रार्थना

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुंवन्दे सर्वलोकैकनाथम्॥

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते॥

गो कोटिदानं ग्रहणेषु काशी प्रयागगङ्गायुत कल्पवासः ।
यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविन्दनाम्ना न समं न तुल्यम् ॥

अप्रमेय हरे विष्णो कृष्णदामोदराच्युत । गोविन्दानन्द सर्वेश वासुदेव नमोऽस्तुते ॥
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडो यस्य वाहनम्। शङ्खः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

विसर्जन

शालग्राम तथा घर में सभी प्रतिष्ठित देवों को छोड़कर सभी आवाहित देवताओं तथा अग्नि का निम्न मन्त्रों का पाठ करते हुए अक्षत छोड़कर विसर्जन करें

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोपूजाक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। कहकर दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करें।

प्रसाद (चरणाम त) ग्रहण

भगवान् श्रीशालग्राम का चरणोदक अत्यन्त कल्याणकारी एवं पुण्यप्रद है। यह सभी पापों को समूल नष्ट कर देता है एवं तपत्रय का शमन कर देता है। अतः श्रद्धा पूर्वक पूजन के अन्त में इसे सर्व प्रथम ग्रहण करना चाहिये। ग्रहण करते समय ध्यान रखें कि यह भूमि पर न गिरे। इसलिये बायें हाथ के ऊपर शुद्ध दोहरा वस्त्र रखकर, उसपर दाहिना हाथ रखें तथा दाहिने हाथ में लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर चरणामृत ग्रहण करें।

अकालमृत्यु हरणं सर्वव्याधि विनाशनम्। विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

तुलसीग्रहण

(तदनन्तर भगवान् श्रीसत्यनारायण को अर्पित किया हुआ तुलसी दल ग्रहण करें)

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्। भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्।।

तुलसी ग्रहण करने के पश्चात् भोग लगाये गये नैवेद्य को प्रसादरूप में भक्तों में बाँटकर स्वयं भी ग्रहण करें। श्रीसत्यनारायणव्रत का प्रसाद अवश्य ग्रहण करना चाहिये।

सहस्रार्चन

(एक हजार नामों से सत्यनारायण भगवान् का दिव्य पूजन)

कथा श्रवण करने से पहले एक हजार (१०००) नामों से तुलसीपत्र के द्वारा सत्यनारायण भगवान् की दिव्य अर्चना करने का विधान है।

***

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रीविष्णुसहस्रनामावलि

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्र महामन्त्रस्य, भगवान् वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीकृष्णः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता, अमृतां शूद्भवोभानुरिति बीजम्, देवकी नन्दनः स्रष्टेति शक्तिः, त्रिसामा सामगः सामेति हृदयम्, शङ्खभृन्नन्दकीचक्रीति कीलकम्, शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्, रथाङ्ग पाणिरक्षोभ्य इति कवचम्, उद्भवः क्षोभणोदेव इति परमो मन्त्रः, श्रीसत्यनारायण प्रीत्यर्थे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्र नामस्तोत्र अर्चने विनियोगः ।

अथ करन्यासः

ॐ उद्भवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ उद्भवाय अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ इतिकरन्यासः ॥

हृदयादिन्यासः

ॐ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः ज्ञानाय हृदयाय नमः।

ॐ सहस्रमूर्धा विश्वात्मा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा।

ॐ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः शक्तये शिखायै वषट्।

ॐ त्रिसामा सामगः सामबलाय कवचाय हुम्।

ॐ रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट्।

ॐ शार्ङ्गधन्वागदाधरः वीर्याय अस्त्राय फट्।

ॐ ऋतुः सुदर्शनः कालः भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

॥ इतिहृदयादिन्यासः ॥

१. ॐ विश्वस्मै नमः।
२. ॐ विष्णवे नमः।
३. ॐ वषट्काराय नमः।
४. ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः।
५. ॐ भूतकृते नमः।
६. ॐ भूतभृते नमः।
७. ॐ भावाय नमः।
८. ॐ भूतात्मने नमः।
९. ॐ भूतभावनाय नमः।
१०. ॐ पूतात्मने नमः।
११. ॐ परमात्मने नमः।
१२. ॐ मुक्तानांपरमायै गतये नमः।
१३. ॐ अव्ययाय नमः।
१४. ॐ पुरुषाय नमः।
१५. ॐ साक्षिणे नमः।
१६. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः।
१७. ॐ अक्षराय नमः।
१८. ॐ योगाय नमः।
१९. ॐ योगविदां नेत्रे नमः।
२०. ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः।
२१. ॐ नारसिंह वपुषे नमः।
२२. ॐ श्रीमते नमः।
२३. ॐ केशवाय नमः।
२४. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
२५. ॐ सर्वस्मै नमः।
२६. ॐ शर्वाय नमः।
२७. ॐ शिवाय नमः।
२८. ॐ स्थाणवे नमः।
२९. ॐ भूतादये नमः।
३०. ॐ निधयेऽव्ययाय नमः।
३१. ॐ सम्भवाय नमः।
३२. ॐ भावनाय नमः।
३३. ॐ भर्त्रे नमः।
३४. ॐ प्रभवाय नमः।
३५. ॐ प्रभवे नमः।
३६. ॐ ईश्वराय नमः।
३७. ॐ स्वयम्भुवे नमः।
३८. ॐ शम्भवे नमः।
३९. ॐ आदित्याय नमः।
४०. ॐ पुष्कराक्षाय नमः।
४१. ॐ महास्वनाय नमः।
४२. ॐ अनादिनिधनाय नमः।
४३. ॐ धात्रे नमः।
४४. ॐ विधात्रे नमः।
४५. ॐ धातवे उत्तमाय नमः।
४६. ॐ अप्रमेयाय नमः।
४७. ॐ हृषीकेशाय नमः।
४८. ॐ पद्मनाभाय नमः।
४९. ॐ अमरप्रभवे नमः।
५०. ॐ विश्वकर्मणे नमः।
५१. ॐ मनवे नमः।
५२. ॐ त्वष्ट्रे नमः।
५३. ॐ स्थविष्ठाय नमः।
५४. ॐ स्थविरायध्रुवाय नमः।
५५. ॐ अग्राह्याय नमः।
५६. ॐ शाश्वताय नमः।
५७. ॐ कृष्णाय नमः।
५८. ॐ लोहिताक्षाय नमः।
५९. ॐ प्रतर्दनाय नमः।
६०. ॐ प्रभूताय नमः।
६१. ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः।
६२. ॐ पवित्राय नमः।
६३. ॐ मङ्गलपराय नमः।
६४. ॐ ईशानाय नमः।
६५. ॐ प्राणदाय नमः।
६६. ॐ प्राणाय नमः।
६७. ॐ ज्येष्ठाय नमः।
६८. ॐ श्रेष्ठाय नमः।
६९. ॐ प्रजापतये नमः।
७०. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
७१. ॐ भूगर्भाय नमः।
७२. ॐ माधवाय नमः।
७३. ॐ मधुसूदनाय नमः।
७४. ॐ ईश्वराय नमः।
७५. ॐ विक्रमिणे नमः।
७६. ॐ धन्विने नमः।
७७. ॐ मेधाविने नमः।
७८. ॐ विक्रमाय नमः।
७९. ॐ क्रमाय नमः।
८०. ॐ अनुत्तमाय नमः।

८१. ॐ दुराधर्षाय नमः।
८२. ॐ कृतज्ञाय नमः।
८३. ॐ कृतये नमः।
८४. ॐ आत्मवते नमः।
८५. ॐ सुरेशाय नमः।
८६. ॐ शरणाय नमः।
८७. ॐ शर्मणे नमः।
८८. ॐ विश्वरेतसे नमः।
८९. ॐ प्रजाभवाय नमः।
९०. ॐ अह्ने नमः।
९१. ॐ संवत्सराय नमः।
९२. ॐ व्यालाय नमः।
९३. ॐ प्रत्ययाय नमः।
९४. ॐ सर्वदर्शनाय नमः।
९५. ॐ अजाय नमः।
९६. ॐ सर्वेश्वराय नमः।
९७. ॐ सिद्धाय नमः।
९८. ॐ सिद्धये नमः।
९९. ॐ सर्वादये नमः।
१००. ॐ अच्युताय नमः।

१०१. ॐ वृषाकपये नमः।
१०२. ॐ अमेयात्मने नमः।
१०३. ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः।
१०४. ॐ वसवे नमः।
१०५. ॐ वसुमनसे नमः।
१०६. ॐ सत्याय नमः।
१०७. ॐ समात्मने नमः।
१०८. ॐ असम्मिताय नमः।
१०९. ॐ समाय नमः।
११०. ॐ अमोघाय नमः।
१११. ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
११२. ॐ वृषकर्मणे नमः।
११३. ॐ वृषाकृतये नमः।
११४. ॐ रुद्राय नमः।
११५. ॐ बहुशिरसे नमः।
११६. ॐ बभ्रवे नमः।
११७. ॐ विश्वयोनये नमः।
११८. ॐ शुचिश्रवसे नमः।
११९. ॐ अमृताय नमः।
१२०. ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः।

१२१. ॐ वरारोहाय नमः।
१२२. ॐ महातपसे नमः।
१२३. ॐ सर्वगाय नमः।
१२४. ॐ सर्वविद्भानवे नमः।
१२५. ॐ विष्वक्सेनाय नमः।
१२६. ॐ जनार्दनाय नमः।
१२७. ॐ वेदाय नमः।
१२८. ॐ वेदविदे नमः
१२९. ॐ अव्यङ्गाय नमः।
१३०. ॐ वेदाङ्गाय नमः।
१३१. ॐ वेदविदे नमः।
१३२. ॐ कवये नमः।
१३३. ॐ लोकाध्यक्षायनमः।
१३४. ॐ सुराध्यक्षाय नमः।
१३५. ॐ धर्माध्यक्षाय नमः।
१३६. ॐ कृताकृतायनमः।
१३७. ॐ चतुरात्मने नमः।
१३८. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः।
१३९. ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः।
१४०. ॐ चतुर्भुजाय नमः।

१४१. ॐ भ्राजिष्णवेनमः।
१४२. ॐ भोजनाय नमः।
१४३. ॐ भोक्त्रे नमः।
१४४. ॐ सहिष्णवे नमः।
१४५. ॐजगदादिजाय नमः।
१४६. ॐ अनघाय नमः।
१४७. ॐ विजयाय नमः।
१४८. ॐ जेत्रे नमः।
१४९. ॐ विश्वयोनये नमः।
१५०. ॐ पुनर्वसवे नमः।
१५१. ॐ उपेन्द्राय नमः।
१५२. ॐ वामनाय नमः।
१५३. ॐ प्रांशवे नमः।
१५४. ॐ अमोघाय नमः।
१५५. ॐ शुचये नमः।
१५६. ॐ ऊर्जिताय नमः।
१५७. ॐ अतीन्द्राय नमः।
१५८. ॐ संग्रहाय नमः।
१५९. ॐ सर्गाय नमः।
१६०. ॐ धृतात्मने नमः।

१६१. ॐ नियमाय नमः।
१६२. ॐ यमाय नमः।
१६३. ॐ वेद्याय नमः।
१६४. ॐ वैद्याय नमः।
१६५. ॐ सदायोगिनेनमः।
१६६. ॐ वीरघ्ने नमः।
१६७. ॐ माधवाय नमः।
१६८. ॐ मधवे नमः।
१६९. ॐ अतीन्द्रियाय नमः।
१७०. ॐ महामायाय नमः।
१७१. ॐ महोत्साहाय नमः।
१७२. ॐ महाबलाय नमः।
१७३.ॐ महाबुद्धये नमः।
१७४. ॐ महावीर्याय नमः।
१७५. ॐ महाशक्तये नमः।
१७६. ॐ महाद्युतये नमः।
१७७. ॐ अनिर्देश्यवपुषेनमः।
१७८. ॐ श्रीमते नमः।
१७९. ॐ अमेयात्मने नमः।
१८०. ॐ महाद्रिधृषे नमः।

१८१. ॐ महेष्वासाय नमः।
१८२. ॐ महीभर्त्रे नमः।
१८३. ॐ श्रीनिवासाय नमः।
१८४. ॐ सताङ्गतये नमः।
१८५. ॐ अनिरुद्धाय नमः।
१८६. ॐ सुरानन्दाय नमः।
१८७. ॐ गोविन्दाय नमः।
१८८. ॐ गोविदां पतये नमः।
१८९. ॐ मरीचये नमः।
१९०. ॐ दमनाय नमः।
१९१. ॐ हंसाय नमः।
१९२. ॐ सुपर्णाय नमः।
१९३. ॐ भुजगोत्तमाय नमः।
१९४. ॐ हिरण्यनाभाय नमः।
१९५. ॐ सुतपसे नमः।
१९६. ॐ पद्मनाभाय नमः।
१९७. ॐ प्रजापतये नमः।
१९८. ॐ अमृत्यवे नमः।
१९९. ॐ सर्वदृशे नमः।
२००. ॐ सिंहाय नमः।

२०१. ॐ संधात्रे नमः।
२०२. ॐ सन्धिमते नमः।
२०३. ॐ स्थिराय नमः।
२०४. ॐ अजाय नमः।
२०५. ॐ दुर्मर्षणाय नमः।
२०६. ॐ शास्त्रे नमः।
२०७. ॐ विश्रुतात्मने नमः।
२०८. ॐ सुरारिघ्ने नमः।
२०९. ॐ गुरवे नमः।
२१०. ॐ गुरुतमाय नमः।
२११. ॐ धाम्ने नमः।
२१२. ॐ सत्याय नमः।
२१३. ॐ सत्यपराक्रमाय नमः।
२१४. ॐ निमिषाय नमः।
२१५. ॐ अनिमिषाय नमः।
२१६. ॐ स्रग्विणे नमः।
२१७. ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः।
२१८. ॐ अग्रण्ये नमः।
२१९. ॐ ग्रामण्ये नमः।
२२०. ॐ श्रीमते नमः।

२२१. ॐ न्यायाय नमः।
२२२. ॐ नेत्रे नमः।
२२३. ॐ समीरणाय नमः।
२२४. ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः।
२२५. ॐ विश्वात्मने नमः।
२२६. ॐ सहस्राक्षाय नमः।
२२७. ॐ सहस्रपदे नमः
२२८. ॐ आवर्तनाय नमः
२२९. ॐ निवृत्तात्मने नमः।
२३०. ॐ संवृताय नमः।
२३१. ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः।
२३२. ॐ अहःसंवर्तकाय नमः।
२३३. ॐ वह्नये नमः।
२३४. ॐ अनिलाय नमः।
२३५. ॐ धरणीधराय नमः।
२३६. ॐ सुप्रसादाय नमः।
२३७. ॐ प्रसन्नात्मने नमः।
२३८. ॐ विश्वधृषे नमः।
२३९. ॐ विश्वभुजे नमः।
२४०. ॐ विभवे नमः।

२४१. ॐ सत्कर्त्रे नमः।
२४२. ॐ सत्कृताय नमः।
२४३. ॐ साधवे नमः।
२४४. ॐ जह्नवे नमः।
२४५. ॐ नारायणाय नमः।
२४६. ॐ नराय नमः।
२४७. ॐ असंख्येयाय नमः।
२४८. ॐ अप्रमेयात्मने नमः।
२४९. ॐ विशिष्टाय नमः।
२५०. ॐ शिष्टकृते नमः।
२५१. ॐ शुचये नमः।
२५२. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
२५३. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः।
२५४. ॐ सिद्धिदाय नमः।
२५५. ॐ सिद्धिसाधनाय नमः।
२५६. ॐ वृषाहिने नमः।
२५७. ॐ वृषभाय नमः।
२५८. ॐ विष्णवे नमः।
२५९. ॐ वृषपर्वणे नमः।
२६०. ॐ वृषोदराय नमः।

२६१. ॐ वर्धनाय नमः।
२६२. ॐ वर्धमानाय नमः।
२६३. ॐ विविक्ताय नमः।
२६४. ॐ श्रुतिसागराय नमः।
२६५. ॐ सुभुजाय नमः।
२६६. ॐ दुर्धराय नमः।
२६७. ॐ वाग्मिने नमः।
२६८. ॐ महेन्द्राय नमः।
२६९. ॐ वसुदाय नमः।
२७०. ॐ वसवे नमः।
२७१. ॐ नैकरूपाय नमः।
२७२. ॐ बृहद्रूपाय नमः।
२७३. ॐ शिपिविष्टाय नमः।
२७४. ॐ प्रकाशनाय नमः।
२७५. ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः।
२७६. ॐ प्रकाशात्मने नमः।
२७७. ॐ प्रतापनाय नमः।
२७८. ॐ ऋद्धाय नमः।
२७९. ॐ स्पष्टाक्षराय नमः।
२८०. ॐ मन्त्राय नमः।

२८१. ॐ चन्द्रांशवे नमः।
२८२. ॐ भास्करद्युतये नमः।
२८३. ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः।
२८४. ॐ भानवे नमः।
२८५. ॐ शशबिन्दवे नमः।
२८६. ॐ सुरेश्वराय नमः।
२८७. ॐ औषधाय नमः।
२८८. ॐ जगतः सेतवे नमः।
२८९. ॐ सत्यधर्म–
पराक्रमाय नमः
२९०. ॐ भूतभव्य –
भवन्नाथाय नमः।
२९१. ॐ पवनाय नमः।
२९२. ॐ पावनाय नमः।
२९३. ॐ अनलाय नमः।
२९४. ॐ कामघ्ने नमः।
२९५. ॐ कामकृते नमः।
२९६. ॐ कान्ताय नमः।
२९७. ॐ कामाय नमः।
२९८. ॐ कामप्रदाय नमः।

२९९. ॐ प्रभवे नमः।
३००. ॐ युगादिकृते नमः।
३०१. ॐ युगावर्ताय नमः।
३०२. ॐ नैकमायाय नमः
३०३. ॐ महाशनाय नमः
३०४. ॐ अदृश्याय नमः
३०५. ॐ अव्यक्तरूपाय नमः।
३०६. ॐ सहस्रजिते नमः।
३०७. ॐ अनन्तजिते नमः।
३०८. ॐ इष्टाय नमः।
३०९. ॐ अविशिष्टाय नमः।
३१०. ॐ शिष्टेशाय नमः।
३११. ॐ शिखण्डिने नमः।
३१२. ॐ नहुषाय नमः।
३१३. ॐ वृषाय नमः।
३१४. ॐ क्रोधघ्ने नमः।
३१५. ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः।
३१६. ॐ विश्वबाहवे नमः।
३१७. ॐ महीधराय नमः।
३१८. ॐ अच्युताय नमः।

३१९. ॐ प्रथिताय नमः।
३२०. ॐ प्राणाय नमः।
३२१. ॐ प्राणदाय नमः।
३२२. ॐ वासवानुजाय नमः।
३२३. ॐ अपांनिधये नमः।
३२४. ॐ अधिष्ठानाय नमः।
३२५. ॐ अप्रमत्ताय नमः।
३२६. ॐ प्रतिष्ठिताय नमः।
३२७. ॐ स्कन्दाय नमः।
३२८. ॐ स्कन्दधराय नमः।
३२९. ॐ धुर्याय नमः।
३३०. ॐ वरदाय नमः।
३३१. ॐ वायुवाहनाय नमः।
३३२. ॐ वासुदेवाय नमः।
३३३. ॐ बृहद्भानवे नमः।
३३४. ॐ आदिदेवाय नमः।
३३५. ॐ पुरन्दराय नमः।
३३६. ॐ अशोकाय नमः।
३३७. ॐ तारणाय नमः।
३३८. ॐ ताराय नमः।

३३९. ॐ शूराय नमः।
३४०. ॐ शौरये नमः।
३४१. ॐ जनेश्वराय नमः।
३४२. ॐ अनूकूलाय नमः।
३४३. ॐ शतावर्ताय नमः।
३४४. ॐ पद्मिने नमः।
३४५. ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः।
३४६. ॐ पद्मनाभाय नमः।
३४७. ॐ अरविन्दाक्षाय नमः।
३४८. ॐ पद्मगर्भाय नमः।
३४९. ॐ शरीरभृते नमः।
३५०. ॐ महर्द्धये नमः।
३५१. ॐ ऋद्धाय नमः।
३५२. ॐ वृद्धात्मने नमः।
३५३. ॐ महाक्षाय नमः।
३५४. ॐ गरुडध्वजाय नमः।
३५५. ॐ अतुलाय नमः।
३५६. ॐ शरभाय नमः।
३५७. ॐ भीमाय नमः।
३५८. ॐ समयज्ञाय नमः।

३५९. ॐ हविर्हरये नमः।
३६०. ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः।
३६१. ॐ लक्ष्मीवते नमः।
३६२. ॐ समितिञ्जयाय नमः।
३६३. ॐ विक्षराय नमः।
३६४. ॐ रोहिताय नमः।
३६५. ॐ मार्गाय नमः।
३६६. ॐ हेतवे नमः।
३६७. ॐ दामोदराय नमः
३६८. ॐ सहाय नमः
३६९. ॐ महीधराय नमः
३७०. ॐ महाभागाय नमः
३७१. ॐ वेगवते नमः
३७२. ॐ अमिताशनाय नमः
३७३. ॐ उद्भवाय नमः
३७४. ॐ क्षोभणाय नमः
३७५. ॐ देवाय नमः
३७६. ॐ श्रीगर्भाय नमः
३७७. ॐ परमेश्वराय नमः
३७८. ॐ करणाय नमः

३७९. ॐ कारणाय नमः
३८०. ॐ कर्त्रे नमः
३८१. ॐ विकर्त्रे नमः
३८२. ॐ गहनाय नमः
३८३. ॐ गुहाय नमः
३८४. ॐ व्यवसायाय नमः
३८५. ॐ व्यवस्थानाय नमः
३८६. ॐ संस्थानाय नमः।
३८७. ॐ स्थानदाय नमः।
३८८. ॐ ध्रुवाय नमः।
३८९. ॐ परर्द्धये नमः।
३९०. ॐ परमस्पष्टाय नमः।
३९१. ॐ तुष्टाय नमः।
३९२. ॐ पुष्टाय नमः।
३९३. ॐ शुभेक्षणाय नमः।
३९४. ॐ रामाय नमः।
३९५. ॐ विरामाय नमः।
३९६. ॐ विरजसे नमः।
३९७. ॐ मार्गाय नमः।
३९८. ॐ नेयाय नमः।

३९९. ॐ नयाय नमः।
४००. ॐ अनयाय नमः।
४०१. ॐ वीराय नमः।
४०२. ॐ शक्तिमतांश्रेष्ठाय नमः।
४०३. ॐ धर्माय नमः।
४०४. ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः।
४०५. ॐ वैकुण्ठाय नमः।
४०६. ॐ पुरुषाय नमः।
४०७. ॐ प्राणाय नमः।
४०८. ॐ प्राणदाय नमः।
४०९. ॐ प्रणवाय नमः।
४१०. ॐ पृथवे नमः।
४११. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
४१२. ॐ शत्रुघ्नाय नमः।
४१३. ॐ व्याप्ताय नमः।
४१४. ॐ वायवे नमः।
४१५. ॐ अधोक्षजाय नमः।
४१६. ॐ ऋतवे नमः।
४१७. ॐ सुदर्शनाय नमः।
४१८. ॐ कालाय नमः।

४१९. ॐ परमेष्ठिने नमः।
४२०. ॐ परिग्रहाय नमः।
४२१. ॐ उग्राय नमः।
४२२. ॐ संवत्सराय नमः।
४२३. ॐ दक्षाय नमः।
४२४. ॐ विश्रामाय नमः।
४२५. ॐ विश्वदक्षिणाय नमः।
४२६. ॐ विस्ताराय नमः।
४२७. ॐ स्थावरस्थाणवे नमः।
४२८. ॐ प्रमाणाय नमः।
४२९. ॐ बीजायाव्ययाय नमः।
४३०. ॐ अर्थाय नमः।
४३१. ॐ अनर्थाय नमः।
४३२. ॐ महाकोशाय नमः।
४३३. ॐ महाभोगाय नमः।
४३४. ॐ महाधनाय नमः।
४३५. ॐ अनिर्विण्णाय नमः।
४३६. ॐ स्थविष्ठाय नमः।
४३७. ॐ अभुवे नमः।
४३८. ॐ धर्मयूपाय नमः।

४३९. ॐ महामखाय नमः।
४४०. ॐ नक्षत्रनेमये नमः।
४४१. ॐ नक्षत्रिणे नमः।
४४२. ॐ क्षमाय नमः।
४४३. ॐ क्षामाय नमः।
४४४. ॐ समीहनाय नमः।
४४५. ॐ यज्ञाय नमः।
४४६. ॐ इज्याय नमः।
४४७. ॐ महेज्याय नमः।
४४८. ॐ क्रतवे नमः।
४४९. ॐ सत्राय नमः।
४५०. ॐ सतां गतये नमः।
४५१. ॐ सर्वदर्शिने नमः।
४५२. ॐ विमुक्तात्मने नमः।
४५३. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
४५४. ॐ ज्ञानाय उत्तमाय नमः।
४५५. ॐ सुव्रताय नमः।
४५६. ॐ सुमुखाय नमः।
४५७. ॐ सूक्ष्माय नमः।

४५८. ॐ सुघोषाय नमः।
४५९. ॐ सुखदाय नमः।
४६०. ॐ सुहृदे नमः।
४६१. ॐ मनोहराय नमः।
४६२. ॐ जितक्रोधाय नमः।
४६३. ॐ वीरबाहवे नमः।
४६४. ॐ विदारणाय नमः।
४६५. ॐ स्वापनाय नमः।
४६६. ॐ स्ववशाय नमः।
४६७. ॐ व्यापिने नमः।
४६८. ॐ नैकात्मने नमः।
४६९. ॐ नैककर्मकृते नमः।
४७०. ॐ वत्सराय नमः।
४७१. ॐ वत्सलाय नमः।
४७२. ॐ वत्सिने नमः।
४७३. ॐ रत्नगर्भाय नमः।
४७४. ॐ धनेश्वराय नमः।
४७५. ॐ धर्मगुपे नमः।
४७६. ॐ धर्मकृते नमः।
४७७. ॐ धर्मिणे नमः।

90

४७८. ॐ सते नमः।
४७९. ॐ असते नमः।
४८०. ॐ क्षराय नमः।
४८१. ॐ अक्षराय नमः।
४८२. ॐ अविज्ञात्रे नमः।
४८३. ॐ सहस्रांशवे नमः।
४८४. ॐ विधात्रे नमः।
४८५. ॐ कृतलक्षणाय नमः।
४८६. ॐ गभस्तिनेमये नमः।
४८७. ॐ सत्त्वस्थाय नमः।
४८८. ॐ सिंहाय नमः।
४८९. ॐ भूतमहेश्वराय नमः।
४९०. ॐ आदिदेवाय नमः।
४९१. ॐ महादेवाय नमः।
४९२. ॐ देवेशाय नमः।
४९३. ॐ देवभृद्गुरवे नमः।
४९४. ॐ उत्तरस्मै नमः।
४९५. ॐ गोपतये नमः।
४९६. ॐ गोप्त्रे नमः।
४९७. ॐ ज्ञानगम्याय नमः।

४९८. ॐ पुरातनाय नमः।
४९९. ॐ शरीरभूतभृते नमः।
५००. ॐ भोक्त्रे नमः।
५०१. ॐ कपीन्द्राय नमः।
५०२. ॐ भूरिदक्षिणाय नमः।
५०३. ॐ सोमपाय नमः।
५०४. ॐ अमृतपाय नमः।
५०५. ॐ सोमाय नमः।
५०६. ॐ पुरुजिते नमः।
५०७. ॐ पुरुसत्तमाय नमः।
५०८. ॐ विनयाय नमः।
५०९. ॐ जयाय नमः।
५१०. ॐ सत्यसंधाय नमः।
५११. ॐ दाशार्हाय नमः।
५१२. ॐ सात्वतां पत्ये नमः।
५१३. ॐ जीवाय नमः।
५१४. ॐ विनयितासाक्षिणे नमः।
५१५. ॐ मुकुन्दाय नमः।
५१६. ॐ अमितविक्रमाय नमः।
५१७. ॐ अम्भोनिधये नमः।

५१८. ॐ अनन्तात्मने नमः।
५१९. ॐ महोदधिशयाय नमः।
५२०. ॐ अन्तकाय नमः।
५२१. ॐ अजाय नमः।
५२२. ॐ महार्हाय नमः।
५२३. ॐ स्वाभाव्याय नमः।
५२४. ॐ जितामित्राय नमः।
५२५. ॐ प्रमोदनाय नमः।
५२६. ॐ आनन्दाय नमः।
५२७. ॐ नन्दनाय नमः।
५२८. ॐ नन्दाय नमः।
५२९. ॐ सत्यधर्माय नमः।
५३०. ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
५३१. ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः।
५३२. ॐ कृतज्ञाय नमः।
५३३. ॐ मेदिनीपतये नमः।
५३४. ॐ त्रिपदाय नमः।
५३५. ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः।
५३६. ॐ महाशृङ्गाय नमः।

५३७. ॐ कृतान्तकृते नमः।
५३८. ॐ महावराहाय नमः।
५३९. ॐ गोविन्दाय नमः।
५४०. ॐ सुषेणाय नमः।
५४१. ॐ कनकाङ्गदिने नमः।
५४२. ॐ गुह्याय नमः।
५४३. ॐ गभीराय नमः।
५४४. ॐ गहनाय नमः।
५४५. ॐ गुप्ताय नमः।
५४६. ॐ चक्रगदाधराय नमः।
५४७. ॐ वेधसे नमः।
५४८. ॐ स्वाङ्गाय नमः।
५४९. ॐ अजिताय नमः।
५५०. ॐ कृष्णाय नमः।
५५१. ॐ दृढाय नमः।
५५२. ॐ सङ्कर्षणायाच्युताय नमः।
५५३. ॐ वरुणाय नमः।
५५४. ॐ वारुणाय नमः।
५५५. ॐ वृक्षाय नमः।

५५६. ॐ पुष्कराक्षाय नमः।
५५७. ॐ महामनसे नमः।
५५८. ॐ भगवते नमः।
५५९. ॐ भगघ्ने नमः।
५६०. ॐ आनन्दिने नमः।
५६१. ॐ वनमालिने नमः।
५६२. ॐ हलायुधाय नमः।
५६३. ॐ आदित्याय नमः।
५६४. ॐ ज्योतिरादित्याय नमः।
५६५. ॐ सहिष्णवे नमः।
५६६. ॐ गतिसत्तमाय नमः।
५६७. ॐ सुधन्वने नमः।
५६८. ॐ खण्डपरशवे नमः।
५६९. ॐ दारुणाय नमः।
५७०. ॐ द्रविणप्रदाय नमः।
५७१. ॐ दिविस्पृशे नमः।
५७२. ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः।
५७३. ॐ वाचस्पतये-
अयोनिजाय नमः।
५७४. ॐ त्रिसाम्ने नमः।
५७५. ॐ सामगाय नमः।
५७६. ॐ साम्ने नमः।
५७७. ॐ निर्वाणाय नमः।
५७८. ॐ भेषजाय नमः।
५७९. ॐ भिषजे नमः।
५८०. ॐ सन्यासकृते नमः।
५८१. ॐ शमाय नमः।
५८२. ॐ शान्ताय नमः।
५८३. ॐ निष्ठायै नमः।
५८४. ॐ शान्त्यै नमः।
५८५. ॐ परायणाय नमः।
५८६. ॐ शुभाङ्गाय नमः।
५८७. ॐ शान्तिदाय नमः।
५८८. ॐ स्रष्ट्रे नमः।
५८९. ॐ कुमुदाय नमः।
५९०. ॐ कुवलेशयाय नमः।
५९१. ॐ गोहिताय नमः।
५९२. ॐ गोपतये नमः।
५९३. ॐ गोप्त्रे नमः।
५९४. ॐ वृषभाक्षाय नमः।
५९५. ॐ वृषप्रियाय नमः।
५९६. ॐ अनिवर्तिने नमः।
५९७. ॐ निवृत्तात्मने नमः।
५९८. ॐ संक्षेप्त्रे नमः।
५९९. ॐ क्षेमकृते नमः।
६००. ॐ शिवाय नमः।
६०१. ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः।
६०२. ॐ श्रीवासाय नमः।
६०३. ॐ श्रीपतये नमः।
६०४. ॐ श्रीमतां वराय नमः।
६०५. ॐ श्रीदाय नमः।
६०६. ॐ श्रीशाय नमः।
६०७. ॐ श्रीनिवासाय नमः।
६०८. ॐ श्रीनिधये नमः।
६०९. ॐ श्रीविभावनाय नमः।
६१०. ॐ श्रीधराय नमः।
६११. ॐ श्रीकराय नमः।
६१२. ॐ श्रेयसे नमः।
६१३. ॐ श्रीमते नमः।
६१४. ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः।
६१५. ॐ स्वक्षाय नमः।
६१६. ॐ स्वङ्गाय नमः।
६१७. ॐ शतानन्दाय नमः।
६१८. ॐ नन्दिने नमः।
६१९. ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः।
६२०. ॐ विजितात्मने नमः।
६२१. ॐ अविधेयात्मने नमः।
६२२. ॐ सत्कीर्तये नमः।
६२३. ॐ छिन्नसंशयाय नमः।
६२४. ॐ उदीर्णाय नमः।
६२५. ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः।
६२६. ॐ अनीशाय नमः।
६२७. ॐ शाश्वतस्थिराय नमः।
६२८. ॐ भूशयाय नमः।
६२९. ॐ भूषणाय नमः।
६३०. ॐ भूतये नमः।
६३१. ॐ विशोकाय नमः।
६३२. ॐ शोकनाशनाय नमः।
६३३. ॐ अर्चिष्मते नमः।
६३४. ॐ अर्चिताय नमः।

६३५. ॐ कुम्भाय नमः।
६३६. ॐ विशुद्धात्मने नमः।
६३७. ॐ विशोधनाय नमः।
६३८. ॐ अनिरुद्धाय नमः।
६३९. ॐ अप्रतिरथाय नमः।
६४०. ॐ प्रद्युम्नाय नमः।
६४१. ॐ अमितविक्रमाय नमः।
६४२. ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः।
६४३. ॐ वीराय नमः।
६४४. ॐ शौरये नमः।
६४५. ॐ शूरजनेश्वराय नमः।
६४६. ॐ त्रिलोकात्मने नमः।
६४७. ॐ त्रिलोकेशाय नमः।
६४८. ॐ केशवाय नमः।
६४९. ॐ केशिघ्ने नमः।
६५०. ॐ हरये नमः।
६५१. ॐ कामदेवाय नमः।
६५२. ॐ कामपालाय नमः।
६५३. ॐ कामिने नमः।
६५४. ॐ कान्ताय नमः।

६५५. ॐ कृतागमाय नमः।
६५६. ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः।
६५७. ॐ विष्णवे नमः।
६५८. ॐ वीराय नमः।
६५९. ॐ अनन्ताय नमः।
६६०. ॐ धनञ्जयाय नमः।
६६१. ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
६६२. ॐ ब्रह्मकृते नमः।
६६३. ॐ ब्रह्मणे नमः।
६६४. ॐ ब्रह्मणे नमः।
६६५. ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः।
६६६. ॐ ब्रह्मविदे नमः।
६६७. ॐ ब्राह्मणाय नमः।
६६८. ॐ ब्रह्मिणे नमः।
६६९. ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः।
६७०. ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः।
६७१. ॐ महाक्रमाय नमः।
६७२. ॐ महाकर्मणे नमः।
६७३. ॐ महातेजसे नमः।
६७४. ॐ महोरगाय नमः।

६७५. ॐ महाक्रतवे नमः।
६७६. ॐ महायज्वने नमः
६७७. ॐ महायज्ञाय नमः।
६७८. ॐ महाहविषे नमः।
६७९. ॐ स्तव्याय नमः।
६८०. ॐ स्तवप्रियाय नमः।
६८१. ॐ स्तोत्राय नमः।
६८२. ॐ स्तुतये नमः।
६८३. ॐ स्तोत्रे नमः
६८४. ॐ रणप्रियाय नमः।
६८५. ॐ पूर्णाय नमः।
६८६. ॐ पूरयित्रे नमः।
६८७. ॐ पुण्याय नमः।
६८८. ॐ पुण्यकीर्तये नमः।
६८९. ॐ अनामयाय नमः।
६९०. ॐ मनोजवाय नमः।
६९१. ॐ तीर्थकराय नमः।
६९२. ॐ वसुरेतसे नमः।
६९३. ॐ वसुप्रदाय नमः।
६९४. ॐ वसुप्रदाय नमः।

६९५. ॐ वासुदेवाय नमः।
६९६. ॐ वसवे नमः।
६९७. ॐ वसुमनसे नमः।
६९८. ॐ हविषे नमः।
६९९. ॐ सद्गतये नमः।
७००. ॐ सत्कृतये नमः।
७०१. ॐ सत्तायै नमः।
७०२. ॐ सद्भूतये नमः।
७०३. ॐ सत्परायणाय नमः।
७०४. ॐ शूरसेनाय नमः।
७०५. ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः।
७०६. ॐ सन्निवासाय नमः।
७०७. ॐ सुयामुनाय नमः।
७०८. ॐ भूतावासाय नमः।
७०९. ॐ वासुदेवाय नमः।
७१०. ॐ सर्वासुनिलयाय नमः।
७११. ॐ अनलाय नमः।
७१२. ॐ दर्पघ्ने नमः।
७१३. ॐ दर्पदाय नमः।
७१४. ॐ दृप्ताय नमः।

७१५. ॐ दुर्धराय नमः।
७१६. ॐ अपराजिताय नमः।
७१७. ॐ विश्वमूर्तये नमः।
७१८. ॐ महामूर्तये नमः।
७१९. ॐ दीप्तमूर्तये नमः।
७२०. ॐ अमूर्तिमते नमः।
७२१. ॐ अनेकमूर्तये नमः।
७२२. ॐ अव्यक्ताय नमः।
७२३. ॐ शतमूर्तये नमः।
७२४. ॐ शताननाय नमः।
७२५. ॐ एकस्मै नमः।
७२६. ॐ नैकाय नमः।
७२७. ॐ सवाय नमः।
७२८. ॐ काय नमः।
७२९. ॐ कस्मै नमः।
७३०. ॐ यस्मै नमः।
७३१. ॐ तस्मै नमः।
७३२. ॐ पदायानुत्तमाय नमः।
७३३. ॐ लोकबन्धवे नमः।
७३४. ॐ लोकनाथाय नमः।
७३५. ॐ माधवाय नमः।
७३६. ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
७३७. ॐ सुवर्णवर्णाय नमः।
७३८. ॐ हेमाङ्गाय नमः।
७३९. ॐ वराङ्गाय नमः।
७४०. ॐ चन्दनाङ्गदिने नमः।
७४१. ॐ वीरघ्ने नमः।
७४२. ॐ विषमाय नमः।
७४३. ॐ शून्याय नमः।
७४४. ॐ घृताशिषे नमः।
७४५. ॐ अचलाय नमः।
७४६. ॐ चलाय नमः।
७४७. ॐ अमानिने नमः।
७४८. ॐ मानदाय नमः।
७४९. ॐ मान्याय नमः।
७५०. ॐ लोकस्वामिने नमः।
७५१. ॐ त्रिलोकधृषे नमः।
७५२. ॐ सुमेधसे नमः।
७५३. ॐ मेधजाय नमः।
७५४. ॐ धन्याय नमः।
७५५. ॐ सत्यमेधसे नमः।
७५६. ॐ धराधराय नमः।
७५७. ॐ तेजोवृषाय नमः।
७५८. ॐ द्युतिधराय नमः।
७५९. ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः।
७६०. ॐ प्रग्रहाय नमः।
७६१. ॐ निग्रहाय नमः।
७६२. ॐ व्यग्राय नमः।
७६३. ॐ नैकशृङ्गाय नमः।
७६४. ॐ गदाग्रजाय नमः।
७६५. ॐ चतुर्मूर्तये नमः।
७६६. ॐ चतुर्बाहवे नमः।
७६७. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः।
७६८. ॐ चतुर्गतये नमः।
७६९. ॐ चतुरात्मने नमः।
७७०. ॐ चतुर्भावाय नमः।
७७१. ॐ चतुर्वेदविदे नमः।
७७२. ॐ एकपदे नमः।
७७३. ॐ समावर्ताय नमः।
७७४. ॐ अनिवृत्तात्मने नमः।
७७५. ॐ दुर्जयाय नमः।
७७६. ॐ दुरतिक्रमाय नमः।
७७७. ॐ दुर्लभाय नमः।
७७८. ॐ दुर्गमाय नमः।
७७९. ॐ दुर्गाय नमः।
७८०. ॐ दुरावासाय नमः
७८१. ॐ दुरारिघ्ने नमः।
७८२. ॐ शुभाङ्गाय नमः।
७८३. ॐ लोकसारङ्गाय नमः।
७८४. ॐ सुतन्तवे नमः।
७८५. ॐ तन्तुवर्धनाय नमः।
७८६. ॐ इन्द्रकर्मणे नमः।
७८७. ॐ महाकर्मणे नमः।
७८८. ॐ कृतकर्मणे नमः।
७८९. ॐ कृतागमाय नमः।
७९०. ॐ उद्भवाय नमः।
७९१. ॐ सुन्दराय नमः।
७९२. ॐ सुन्दाय नमः।
७९३. ॐ रत्ननाभाय नमः।

७९४. ॐ सुलोचनाय नमः।
७९५. ॐ अर्काय नमः।
७९६. ॐ वाजसनाय नमः।
७९७. ॐ शृङ्गिणे नमः।
७९८. ॐ जयन्ताय नमः।
७९९. ॐ सर्वविज्जयिने नमः।
८००. ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः।
८०१. ॐ अक्षोभ्याय नमः।
८०२. ॐ सर्ववागी-
श्वरेश्वराय नमः।
८०३. ॐ महाह्रदाय नमः।
८०४. ॐ महागर्ताय नमः।
८०५. ॐ महाभूताय नमः।
८०६. ॐ महानिधये नमः।
८०७. ॐ कुमुदाय नमः।
८०८. ॐ कुन्दराय नमः।
८०९. ॐ कुन्दाय नमः।
८१०. ॐ पर्जन्याय नमः।
८११. ॐ पावनाय नमः।
८१२. ॐ अनिलाय नमः।

८१३. ॐ अमृताशाय नमः।
८१४. ॐ अमृतवपुषे नमः।
८१५. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
८१६. ॐ सर्वतोमुखाय नमः।
८१७. ॐ सुलभाय नमः।
८१८. ॐ सुव्रताय नमः।
८१९. ॐ सिद्धाय नमः।
८२०. ॐ शत्रुजिते नमः।
८२१. ॐ शत्रुतापनाय नमः।
८२२. ॐ न्यग्रोधाय नमः।
८२३. ॐ उदुम्बराय नमः।
८२४. ॐ अश्वत्थाय नमः।
८२५. ॐ चाणूरान्ध्र-
निषूदनाय नमः।
८२६. ॐ सहस्रार्चिषे नमः।
८२७. ॐ सप्तजिह्वाय नमः।
८२८. ॐ सप्तैधसे नमः।
८२९. ॐ सप्तवाहनाय नमः।
८३०. ॐ अमूर्तये नमः।
८३१. ॐ अनघाय नमः।

८३२. ॐ अचिन्त्याय नमः।
८३३. ॐ भयकृते नमः।
८३४. ॐ भयनाशनाय नमः।
८३५. ॐ अणवे नमः।
८३६. ॐ बृहते नमः।
८३७. ॐ कृशाय नमः।
८३८. ॐ स्थूलाय नमः।
८३९. ॐ गुणभृते नमः।
८४०. ॐ निर्गुणाय नमः।
८४१. ॐ महते नमः।
८४२. ॐ अधृताय नमः।
८४३. ॐ स्वधृताय नमः।
८४४. ॐ स्वास्याय नमः।
८४५. ॐ प्राग्वंशाय नमः।
८४६. ॐ वंशवर्धनाय नमः।
८४७. ॐ भारभृते नमः।
८४८. ॐ कथिताय नमः।
८४९. ॐ योगिने नमः।
८५०. ॐ योगीशाय नमः।
८५१. ॐ सर्वकामदाय नमः।

८५२. ॐ आश्रमाय नमः।
८५३. ॐ श्रमणाय नमः।
८५४. ॐ क्षामाय नमः।
८५५. ॐ सुपर्णाय नमः।
८५६. ॐ वायुवाहनाय नमः।
८५७. ॐ धनुर्धराय नमः।
८५८. ॐ धनुर्वेदाय नमः।
८५९. ॐ दण्डाय नमः।
८६०. ॐ दमयित्रे नमः।
८६१. ॐ दमाय नमः।
८६२. ॐ अपराजिताय नमः।
८६३. ॐ सर्वसहाय नमः।
८६४. ॐ नियन्त्रे नमः।
८६५. ॐ अनियमाय नमः।
८६६. ॐ अयमाय नमः।
८६७. ॐ सत्त्ववते नमः।
८६८. ॐ सात्त्विकाय नमः।
८६९. ॐ सत्याय नमः।
८७०. ॐ सत्यधर्म-
परायणाय नमः।

८७१. ॐ अभिप्रायाय नमः।
८७२. ॐ प्रियार्हाय नमः।
८७३. ॐ अर्हाय नमः।
८७४. ॐ प्रियकृते नमः।
८७५. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः।
८७६. ॐ विहायसगतये नमः।
८७७. ॐ ज्योतिषे नमः।
८७८. ॐ सुरुचये नमः।
८७९. ॐ हुतभुजे नमः।
८८०. ॐ विभवे नमः।
८८१. ॐ रवये नमः।
८८२. ॐ विरोचनाय नमः।
८८३. ॐ सूर्याय नमः।
८८४. ॐ सवित्रे नमः।
८८५. ॐ रविलोचनाय नमः।
८८६. ॐ अनन्ताय नमः।
८८७. ॐ हुतभुजे नमः।
८८८. ॐ भोक्त्रे नमः।
८८९. ॐ सुखदाय नमः।
८९०. ॐ नैकजाय नमः।
८९१. ॐ अग्रजाय नमः।
८९२. ॐ अनिर्विण्णाय नमः।
८९३. ॐ सदामर्षिणे नमः।
८९४. ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः।
८९५. ॐ अद्भुताय नमः।
८९६. ॐ सनाते नमः।
८९७. ॐ सनातनतमाय नमः।
८९८. ॐ कपिलाय नमः।
८९९. ॐ कपये नमः।
९००. ॐ अप्ययाय नमः।
९०१. ॐ स्वस्तिदाय नमः।
९०२. ॐ स्वस्तिकृते नमः।
९०३. ॐ स्वस्तये नमः।
९०४. ॐ स्वस्तिभुजे नमः।
९०५. ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः।
९०६. ॐ अरौद्राय नमः।
९०७. ॐ कुण्डलिने नमः।
९०८. ॐ चक्रिणे नमः।
९०९. ॐ विक्रमिणे नमः।
९१०. ॐ ऊर्जितशासनाय नमः।
९११. ॐ शब्दातिगाय नमः।
९१२. ॐ शब्दसहाय नमः।
९१३. ॐ शिशिराय नमः।
९१४. ॐ शर्वरीकराय नमः।
९१५. ॐ अक्रूराय नमः।
९१६. ॐ पेशलाय नमः।
९१७. ॐ दक्षाय नमः।
९१८. ॐ दक्षिणस्यै नमः।
९१९. ॐ क्षमिणां वराय नमः।
९२०. ॐ विद्वत्तमाय नमः।
९२१. ॐ वीतभयाय नमः।
९२२. ॐ पुण्यश्रवण–
कीर्तनाय नमः।
९२३. ॐ उत्तारणाय नमः।
९२४. ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः।
९२५. ॐ पुण्याय नमः।
९२६. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः।
९२७. ॐ वीरघ्ने नमः।
९२८. ॐ रक्षणाय नमः।
९२९. ॐ सद्भ्यो नमः।
९३०. ॐ जीवनाय नमः।
९३१. ॐ पर्यवस्थिताय नमः।
९३२. ॐ अनन्तरूपाय नमः।
९३३. ॐ अनन्तश्रिये नमः।
९३४. ॐ जितमन्यवे नमः।
९३५. ॐ भयापहाय नमः।
९३६. ॐ चतुरस्राय नमः।
९३७. ॐ गभीरात्मने नमः।
९३८. ॐ विदिशाय नमः।
९३९. ॐ व्यादिशाय नमः।
९४०. ॐ दिशाय नमः।
९४१. ॐ अनादये नमः।
९४२. ॐ भूर्भुवे नमः।
९४३. ॐ लक्ष्म्यै नमः।
९४४. ॐ सुवीराय नमः।
९४५. ॐ रुचिराङ्गदाय नमः।
९४६. ॐ जननाय नमः।
९४७. ॐ जनजन्मादये नमः।
९४८. ॐ भीमाय नमः।
९४९. ॐ भीमपराक्रमाय नमः।

९५०. ॐ आधारनिलयाय नमः।
९५१. ॐ अधात्रे नमः।
९५२. ॐ पुष्पहासाय नमः।
९५३. ॐ प्रजागराय नमः।
९५४. ॐ ऊर्ध्वगाय नमः।
९५५. ॐ सत्पथाचाराय नमः।
९५६. ॐ प्राणदाय नमः।
९५७. ॐ प्रणवाय नमः।
९५८. ॐ पणाय नमः।
९५९. ॐ प्रमाणाय नमः।
९६०. ॐ प्राणनिलयाय नमः।
९६१. ॐ प्राणभृते नमः।
९६२. ॐ प्राणजीवनाय नमः।
९६३. ॐ तत्त्वाय नमः।
९६४. ॐ तत्त्वविदे नमः।
९६५. ॐ एकात्मने नमः।
९६६. ॐ जन्ममृत्यु-
जरातिगाय नमः।
९६७. ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः।
९६८. ॐ ताराय नमः।
९६९. ॐ सवित्रे नमः।
९७०. ॐ प्रपितामहाय नमः।
९७१. ॐ यज्ञाय नमः।
९७२. ॐ यज्ञपतये नमः।
९७३. ॐ यज्वने नमः।
९७४. ॐ यज्ञाङ्गाय नमः।
९७५. ॐ यज्ञवाहनाय नमः।
९७६. ॐ यज्ञभृते नमः।
९७७. ॐ यज्ञकृते नमः।
९७८. ॐ यज्ञिने नमः।
९७९. ॐ यज्ञभुजे नमः।
९८०. ॐ यज्ञसाधनाय नमः।
९८१. ॐ यज्ञान्तकृते नमः।
९८२. ॐ यज्ञगुह्याय नमः।
९८३. ॐ अन्नाय नमः।
९८४. ॐ अन्नादाय नमः।
९८५. ॐ आत्मयोनये नमः।
९८६. ॐ स्वयंजाताय नमः।
९८७. ॐ वैखानाय नमः।
९८८. ॐ सामगायनाय नमः।
९८९. ॐ देवकीनन्दनाय नमः।
९९०. ॐ स्रष्ट्रे नमः।
९९१. ॐ क्षितीशाय नमः।
९९२. ॐ पापनाशनाय नमः।
९९३. ॐ शङ्खभृते नमः।
९९४. ॐ नन्दकिने नमः।
९९५. ॐ चक्रिणे नमः।
९९६. ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः।
९९७. ॐ गदाधराय नमः।
९९८. ॐ रथाङ्गपाणये नमः।
९९९. ॐ अक्षोभ्याय नमः।
१०००.ॐ **सर्वप्रहरणायुधाय नमः।**

।। इति श्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणि श्रीविष्णुसहस्रनामावलिः सम्पूर्णा ।।
हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्

कान्हादर्शन ज्योतिष केन्द्र

ज्यौतिषीय, आध्यात्म एवं कर्मकाण्ड सेवाएँ आप सहज में ही प्राप्त कर सकते हैं

कुण्डली, वास्तु, भूमि संबन्धी दोषों के द्वारा उत्पन्न आपके जीवन के असाध्य कष्टों का निवारण-योग्य ब्राह्मण विद्वानों के द्वारा जप-हवन आदि ास्त्रीय विधान से कराया जाता है। एवं भागवत् कथा, रामकथा, देवीभागवत, लक्ष्मीयज्ञ, विष्णुयज्ञ,-आदि, कालसर्प- ान्ति, पित -गायत्री, और अन्य आध्यात्मिक सेवाएँ भी दी जाती हैं। *कुण्डली, हस्तरेखा, वास्तु, एवं भूमि ुद्धि, व रत्न आदि पर विचार गहनता से किया जाता है, ताकि आपके जीवन में आने वाली भावी घटनाओं से आप अवगत हो सकें, एवं उनका निवारण कर सकें।

सुन्दर मुहूर्तों में सिद्ध किये हुए यन्त्र-रुद्राक्ष-नवग्रह-रत्न और मालाएँ आदि भी दिये जाते हैं। हस्तलिखित एवं अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर के द्वारा जन्मकुण्डली-निर्माण व फलित अनेक विद्वानों के मत को एकत्रित कर आप तक पहुँचाया जाता है।

नेट ग्रह ही राज्य प्रदान करते हैं और ग्रह ही राज्य छीन लेते हैं, (ग्रहाराज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहाराज्यं हरन्ति च) ग्रहों का ही असर जीवन में अत्यधिक देखने को मिलता है। ग्रहों के विषय को समझने के लिये जन्म कुण्डली का निरीक्षण कराना अति आव यक है।

संस्था से जुड़ने वाले भक्त, एवं ज्योतिषीय सेवा प्राप्त करने वाले भक्त, निम्न पते पर संपर्क करें

प्रधान कार्यलय

117 गोविन्द खण्ड वि वकर्मा नगर, (नियर झिलमिल कॉलोनी) दिल्ली-110095

मोबाइल नं. 9871662417, 9210067801, 9818747603

email:info@tripursundri.org/kanhadarshan@gmail.com/web:www.tripursundri.org/